

बिदेहः १४३ म अक ०१ दिसर्ब २०१३ (रर्य ७ मस १२ अक १४३)



ए अकमे अडिः-

मेलक रीत

(गज्ज, छज्ज, रीव गज्ज, करीग आ कतक संग्रह)

टंन कयार म



श्रीति प्रकाशिन



अनुक्रम

अंगन रात

गजब (१-३३)

रुखव (१-२)

राव गजब (१-१३)

कराँग (१-३३)

कता (१)

अंगन रात

१

हम साहित्यक विद्यार्थी नहि छौं। तेँ साहित्यक रहूत बाम रात, ब्याकवणसँ अंगरिचित छी। तखन सबदिन साहित्यसँ नगार बहन। साहित्यक पोथी-पत्रिका पठरँ सदिखन कटिगव नछीत बहन अछि।

कोनो सामान्य जनमानस जकाँ हमबो मोनमे अंगन आसपासक समाज, रातरवण, गवादिक प्रति अलकालक भार उँपेल्ल होगत बहैत अछि। रहूत बाम भार रितेत समयक रंग-रंग उँडा या जागत अछि। तखन ओगमेसँ किछ अफवक कगमे कागजगव अरतवित भ२ कखलो करिता तेँ कखलो कथा, कखलो गजन तेँ कखलो कराँग आ साहित्यक आन-आन विधाक रूप धारण करैत अछि। हम रैसी किछ नहि कहय चाहँ कावण जतेक कहँ ततेक गनतीक संभारणा रैठि जाएत। रैस एतरेँ कहँ जे हमर "मोनक रात" आम जनक मोनक रातसँ मेन थाएत आ सामाजिक सरोकारसँ जुड़न हमर चिन्तन समाजकेँ आंगु न२ जखरौमे सहायक सिद्ध हएत से आशा बखैत छी।



जिनकब अन्वर्कपासँ कहियो उन्नत नहि हएँ- श्री रिजयकांत मिश्र (अध्यापक)-कन्हय श्री शिबुबाबासा मा-
सुमावी, श्री ताराकांत मा (संपादक, मिथिला समाद), डा० धीरेन्द्र नाथ मिश्र (मैथिली रिवागाथाष्क,
सी.एम.काजेंज) क संग-संग संपूर्ण विदेह परिवारसँ भेटैत हलसँ अतिभूत छी । श्री गजेन्द्र ठाकुर आ
आशिय अन्वर्कहावक जेन कोना शिष्ट, नहि भेटै बहन अछि जहिँसँ हूँकब धन्यवाद कही । श्रुति प्रकाशिन,
दिल्लीक जरीण भवि आभावी बहँ । अतमे हम अण समस्त परिवर्जन-प्रबर्जन, जिनकब रिवा हमर
अस्तित्वक कम्पला नहि कएन जा सकैत अछि, केव प्रति अण प्रतर्कता राख करैत सृष्टिकर्तसँ एतरे
प्रार्थना करै जे सबक हलक संग-संग हूँकब प्रणा एहिना भेटैत बहन ।

२

मैथिली गजनः- हमर दृष्टिमे.

गजनक प्रादुर्भरि अवरि भायामे भेन, तदुपवात एकवा उर्दु अणलोक आ उर्दुक शीगव सब गजनकेँ
रिधे साहित्य-जगतमे रैस चिन्हाव रैलोननि । प्रावभमे गजन माल प्रेमामापे रूमन जागत छन ह्दा,
रितैत समयक संग शीगव सब एकवा सामाजिक मनोकामसँ जोडैत गेनाह आ आरि प्रायः सब
रियगव गजन कहन जागत अछि । भावतमे गजनकेँ जे खाति भेटैत अछि ताहिमे उर्दु गजनक
योगदान अत्यंत अछि । आरि तऽ उर्दु-हिन्दीक अन्तरे आण-आण भावतीय भायामे सेहो गजन रैस
लोकप्रिय भेन जा बहन अछि । मेहदी हसन, जगज्जीत सिंह, गुनाम अली, पकज उदाम, हबिहवा आदि
गायक अण गजन गायकी जेन जग-प्रसिद्धि पौननि ।

मैथिलीमे गजनक जगदाता पं. जरीण साकेँ मानन जागत छहि । सन १९०३ अग्रीमे ३ सरप्रथम
मैथिली गजन लिखननि । एहि सान मैथिली साहित्य जगतमे एकठा आँव एतिहासिक काज भेन छन जे
जगप्रसर्ग मैथिलीक प्रथम पत्रिका "मैथिल हित साधन" रैहवाएँ प्रावभ भेन छन । तै मैथिली
पत्रकारिताक प्रावभ रर्य सेहो एहि सानकेँ मानन जागत अछि । तखन हएव हम सब मैथिली गजन
दिन घुबि आरि । पं.जरीण साक रौद मैथिली साहित्यमे अलक गजनकाव भेनाह । श्री गजेन्द्र ठाकुर
मैथिली गजनक एहि हाकेँ "जरीण-संग" कहैत छुधि (देखन जाए-अन्वर्कहाव आखवमे हूँकब आलेख) ।
कवीर १०१ रैवखक गतिहासमे मैथिली गजन मैथिली साहित्य जगतमे अण उर्पस्ति रैव-रैव दर्ज
करैत बहन अछि । ह्दा दुर्भाग्यरने ज कोना ल कोना कावणरने कतिअएने बहन अछि । मैथिली
गजनकावक मया गजनक र्याकवाक मादेँ अनिश्चितता सेहो एकवा एकात हेरौक प्रह्दथ कावण बहन अछि
।

मैथिली साहित्य पव संकृतक प्रभार ककरासँ छुषित नहि । अदिकाशि मैथिलीक साहित्यकाव लोकनि संकृतक
पक्षित बहनाह अछि । एकदिन जहाँ एहिँसँ साहित्यिक समृद्धि भेन ओतहि दोसव दिन एकठा रैडका
लोकमान सेहो भेन जे मैथिल सरहवा रसा मैथिली साहित्यसँ कठैत छनि जेन । मैथिलीक
अलोकप्रियताक संभरतः गहो एकठा प्येव कावण बहन अछि ।

मैथिली गजनक रिवास-गात्राक चर्चा-एनाकेँ आगाँ रैठरैत आरि किछ एकव र्याकवाक रियगमे चर्चा
कवी । रीसम शिताईमे मैथिलीमे अलक गजनकाव भेनाह आ हूँकब गजन सब रिबिन्न पत्र-पत्रिका
आ श्पोथीक कगमे प्रकाशित-प्रसारित होगत बहन । ह्दा एहिमे रैसी गजन सब गजन-र्याकवाक
मानकक अणकवण नहि करैत अछि आ कखला कान कोना-कोना वचना तँ एहला रूमना जागत अछि
जे ओकवा जरैवदस्ती गजनक श्रेणीमे राखन-गानन जेन अछि । मैथिलीक एहि प्रवाण पीठ ीक
गजनकाव सभमे रैहोकेँ एखला गजनक अवरि रैहव आधरित र्याकवाक परिकम्पणा आ ओकव अणुपानन
कऽ गजन लिखरौक तर्क पटि नहि बहन छहि जे दुर्भाग्यपूर्ण अछि । अवरि-हावसीक गजन-रिवाणकेँ
मैथिली भाषाकृपा निरुपणा आ तकर प्रयोगसँ मैथिली साहित्यकेँ रिस्ताव भेटैतेक, से हमर मानरि अछि
। मैथिलीमे उँदोरैह वचनाक परंपवा बहन अछि । रिरी आ भारक रिवा कोना वचनाक अस्तित्व संभर
नहि ह्दा उँद, अर्नकाव आ र्याकवाक आण-आण मानक एकठा वचनाकेँ उँक्रेरु रैवरैत अछि ताहिमे
कोना दु मत नहि हेरौक चाली । गुना हम एकठा गप्प हबिडा दी जे हमर उँदह्द पत्र निथैत छी



झुदा प्रयास लवदम बहेत अछि जे छन्दरैछ निथी । छन्दरिवाष सिखरौक हेतु तेँ प्रयासवतो बहेत छी । गजन स्याभारिक कपसँ कहन जागड आ एहिमे जोगता सेहो हेरौक चाही तेँ रँहबक (छन्दक) अणुपानन यदि एहिजेन अनिरार्य छै तँ ज नीक रात अछि ।

मैथिली गजनक हेतु एकठा मानक राकबा तैयाव कवरौक जेन श्री गजेन्द्र ठाकुर आ श्री आशीय अणुचिन्हाव जी द्वारा कएन जा बहन प्रयास सुन अछि । ज दुनु गोठे फमशि: "विदेह-मैथिलीक प्रथम ज पाश्चिक" आ "अणुचिन्हाव आखब" ब्लॉगक माध्यमसँ मैथिली गजन राकबाकेँ जल-जल तक पहुँचा बहन छथि । खाम क२ आशीयजी जाहि समर्पणसँ मैथिली गजनक विकास जेन नागन छथि आ नर-नर गजनकाव केँ प्रामोहित करैत छथि से एकठा एतिहासिक प्रयास अछि । हुनकर "अणुचिन्हाव आखब" (गजन आ करौग संग्रह) आ <http://anchinharakhar.kolkata.blogspot.in/> रँगणपव अवरौ-हावनी गजन-राकबाकेँ जाहि तवहेँ मैथिली भाषाक सुरुवात आ सुररहित रँग पवसन जेन अछि ओ अणुकवीय अछि । "अणुचिन्हाव आखब"क प्रकाशक राँद मैथिल गजन-जगतमे एकठा नरगण प्रारंभ जेन जकरा हेव श्री गजेन्द्र ठाकुर "अणुचिन्हाव गण" कहि संरोधित कएल छथि । मैथिली गजनक ज नरगण अलक नर गजनकावकेँ प्रामोहित कएनक । अलक बचकावकेँ गजन आ सेहो राकबाक मापदण्ड पव सेठन गजन, करौग कता जखनि निखरौक जेन प्रेषित कएनक । एहि गणक किछ गजनकावमे श्री गुमथकानि मा, श्री अमित मिश्र, श्रीमति शीतलका टोषरी, श्री मिश्र मा, श्री जगदानंद मा "मन्त्र", श्रीमति करी मा, श्री बाजरी वंजुन मिश्र, श्री पंकज टोषरी "नरगण" सग अलको नाम अछि जे अणु प्रतीताक रँगण गजनकावक कपमे मैथिली साहित्य-जगतमे स्थापित भ२ चुकन छथि । हमरुँ पहिल अणु छूँन-फूँन भाषामे किछ करिता निथेत बही झुदा विदेह परिवार आ अणुचिन्हाव-आखब परिवार हमरा गजनक माल रँतोनक आ गजन निखरौक जेन प्रेषित कएनक । एहि संग्रहक गजन सत लिनके सतक स३प्रयासक प्रतिफल अछि ।

आरँ हम अणु सतक मोमाँ, एख धरि हम गजनक रियसमे जतरौ जेन "अणुचिन्हाव आखब" आ विदेह परिवारसँ ग्रहण क२ सकलौ, ताहि आधाव पव गजनमे प्रयास होमएरौ किछ प्रचलित शिष्टारणीक संकलित पविचय बाखँ चहरँ:-

१. **शेव रा शोषरी** - दु पाँतिमे पूर्ण भारक अतिरक्ति थिक शेव रा शोषरी ।

२. **मतनाक शेव रा मतना**- कोला गजनक पहिल शेवकेँ मतना कहन जागत अछि । एकव दुनु पाँतिमे काहिया आ वदीहक बहरँ आरंभक ।

३. **वदीह**- मतना रँग शेवक अंतिम शिष्ट, समूह जे ओग शेवक दुनु पाँतिमे जस के तस बहै । ओग रिग वदीहक शेव एरँ गजन सेहो होगत अछि ।

४. **काहिया** - मतनाक शेवमे वदीहसँ पहिल जे तुकासु रा सुव अथवा मात्राक साम्य बहेत छै तकरा काहिया कहन जागत अछि । रिगा काहियाकेँ शेव रा गजन बहि कहन जा सकैत अछि । मतनाक शेवक अनारे गजनक प्रहक शेवक दोसव पाँतिमे वदीहसँ पहिल काहिया हेएरँ आरंभक । काहिया संरौरी रिस्तुत निखम "अणुचिन्हाव-आखब"मे <http://anchinharakhar.kolkata.blogspot.in/> पव देखन जा सकैत अछि ।

५. **मकता** - मकता गजनक अंतिम शेवकेँ कहन जागत अछि जाहिमे गजनकाव अणु नाम रा उषणामक उल्लेख सेहो करैत छथि ।

६. **रँहब** - सवन भाषा मे कही तँ गजनमे प्रयास छंदकेँ रँहब कहन जागत अछि । रँहबक रिगा गजन कहन (निखन) बहि जा सकैत अछि । कतौ-कतौ आजाद गजनक परिकल्पना सेहो कएन जेन झुदा, ताहुमे काहिया अनिरार्य । एहन गजनक प्रचलन सेहो रँहूत कया अछि । मैथिलीमे रँहबकेँ झुथातः तीस भागमे रँगणक कएन जेन अछि-



(क) रार्णिक ररहव

(ख) मात्रिक ररहव

(ग) अवररी ररहव

अवररी ररहवके तीण खल्लमे रररैठन गेन अछि- १. समाण ररहव २. अर्धसमाण ररहव आ ३. असमाण ररहव ।

१. समाण ररहव - समाण ररहवक अतस्कात सात ठा ररहवके बाखन गेन अछि जे अग्रलिखित अछि:- (क.) ररहले-हज्ज (ख.) ररहले-बमान (ग.) ररहले-कागिन (घ) ररहले-रूतकाविर (ड.) ररहले-रूतदाविक (ट.) ररहले-बज्ज (ड.) ररहले-राहिव ।

२. अर्धसमाण ररहव - अर्धसमाण ररहवक अतस्कात सेहो सात ठा ररहवके बाखन गेन अछि जे एना अछि- (क.) ररहले-तरीन (ख.) ररहले-मदीद (ग.) ररहले-ररमीत (घ.) ररहले-रूजाम (ड.) ररहले रूगभव (ट.) ररहले-गजबिख (ड.) ररहले-रूउजिर ।

३. असमाण ररहव - असमाण ररहवक अतस्कात रून तेवह गोरै ररहवके बाखन गेन अछि जकव रिरवण एना अछि- (क.) ररहले-खगीर (ख.) ररहले-जदीद (ग.) ररहले-सवीख (घ.) ररहले-कवीर (ड.) ररहले-रूशानिक (ट.) ररहले-करीर (ड.) ररहले-असम (ज.) ररहले-करीव (घ.) ररहले-सगीव (ए.) ररहले-सवीम (रै.) ररहले-सगीम (रै.) ररहले-रूमीद (ड) ररहले-रूमीम ।

आशीयजी कहत छथि जे उगरोउ ररहवक अनारे आरो ररूत बाम ररहव अछि रूदा ओ सभ अवररी-रूदूमे ररूत ररैसी प्रचरित भहि अछि, जेकिन हमर ग ररिगुस अछि जे आशीयजी जन्दिए ओग ररहव सभके सेहो मैथिली भाषाभरुप समायोजित क२ हमरा सभके पवसत्रह । एहिठाम एकठा रीत आओव कहय चाहर जे गजनक सय्यक्रमे एतए हम जे किछ ज्ञानकारी देरौ ओग सय्यक्रमे ररिनुत ज्ञानकारीक लेन "अनरिहार आखव" पठरी एर <http://anchi.nhar.akhar.kol.kat.a.bl.ogspot.in/> पव जाग ।

एहि सग्रहमे सग्रहित हमर किछ गजन आ करीग एहला जेठत जे गजनक रूकवक शत-प्रतिशत अग्रगणन भहि करैत हएत । तखन टूकि ग हमर पहिन गजन-सग्रह अछि आ एहिमे सन्निहित गजन सभ हमर प्रारंभिक वचना अछि ते एहि वचनासभक प्रति कल भारुक छी । सग्रहि आशियित छी जे अगिना सय्यका अरैत-अरैत हम एहि गजन सभमे उचित सुधाव करवामे सहन भ२ जएर अग्रथा सन्निहित भहि करव । अतमे एहि पौथामे जे किछ अगल सभके सार्थक नगए तकव श्रेयक भागी "रिदेह" आ "अनरिहार आखव" पविराव अछि आ जत कते कोला त्रुष्ट रूमागत से हमरा माथ पव आओत । अगल सरहक सुमार आ उमोली प्रतिरियाक आशिक सग हम अगल ग वचना सभ अहाँ सभक रीट पवमि बहन छी ।

-टदण रूमार सा

१+-०+-२०१२ (कोनकाता)



गजव

1

जोक कहै राह-राह की खुर मिथे छी
केना कही जे कमसेमँ गदवी सीरै छी

शेद-जान बुलै छी आ ओकरे ओमवारी
सोमवारैमे ओकरे खानी दिस कष्टै छी

बान-बंगक जोत देखाकऽ मोष बुमारी
देह जवैए खानी खुषक सेप घोरै छी

कतऽ जेन ओ वीत प्रवसा से बहि जानि
"टंदन" गलै छी गीत मधुघुष्ट पीरै छी

रर्ष-१३

2

हाथमे खुबगी मापे पधिया

छनु कवी फफवक रधिया

आधिग-बुआ तऽ चेखवी-चेखवी

बाकमे सुलैए तैयो नधिया

पुत-कपुतो कहलैछ रौआ

बुँछक कित्तु होमि सबधिया



बैहू-रैथीकेँ ज़ारि बरुन छै

सभकेँ चढ़ले की दूर्गतिया ?

बाबी ज़गनी होगछे "टंदन"

सृष्टि केव ज़ प्रेम-दुबतिया

रर्पी-११

3.

माँम रौरन ज़खन रौरती पिया यो अहाँ मोन पड़लौ

बाति आसन ज़खन काबी पिया यो अहाँ मोन पड़लौ

फुलेले ज़खन बात-बाणी पिया यो अहाँ मोन पड़लौ

कोगनी ज़खन रैजे रौड़ ी पिया यो अहाँ मोन पड़लौ

पहिली ज़खन नाम माड़ ी पिया यो अहाँ मोन पड़लौ

सर्पी ज़खन माथ छँकनी पिया यो अहाँ मोन पड़लौ

रिबहनन ज़लेछ भाती पिया यो अहाँ मोन पड़लौ

दहेले काजब केव धाबी पिया यो अहाँ मोन पड़लौ

सजौले सेज ज़खन ताकी पिया यो अहाँ मोन पड़लौ

पढ़ छी "टंदन" केव पाँती पिया यो अहाँ मोन पड़लौ

रर्पी-२०

4

8



प्रेम केरौ कि केरौ फकर्ये सएह बहि जाणि बहल डी
अश्रुबाव तसिखायन सभठी सगना डानि बहल डी

सात जग्न धरि सग बहत से सप्पत खएनक मुष्ट
हुमि डले पिबीतक रतिखा मल-अनुमानि बहल डी

धन-रैभर अश्रुयक आगाँ के पृष्ठतेक निवधनके ?
सब-लह केव मोन ल किछु सभठी जाणि बहल डी

रौत गेनग से रौत गेनग बहि मोन पाविक २ कासर
अरो बहि तसियेरे "टंदन" से निश्चय ठानि बहल डी

रर्षि-२९

5

हबहोव भेले रौड शौर भेले
सजले रौरात मठकोव भेले

मबरौ सजले पिगरी रजले
नष्टुआ केव नाट रोजोव भेले

जे भोग डलेक तबि पोख बहे
तीमल तकखा तिनकोव भेले

हम रैसन डी अहबियामे



जे चाण छलैक से चक्राव भेलै

"टंढर" हिय हर्य उफलै छैक

जँ कुदम आँधिमाँ त२ लाव भेलै

रर्ष-१२

6

जगबलमे वाति रीतन,

छलै लारे वाति शीतन

चला कणलै ओम सहबन,

मलै छै तै भोव तीतन

कडमछागत मोष-प्राणो

करे हेषी वाति रीतन

बूमय चाली, नियति से का,

बहन छी हागव कि ज़ीतन

पुढय सब, की भेन "टंढर"

कही केषा अगण रीतन

रँहले-गजबिख (1222-2122)

7

एथन वाति कष्टै छी हम कनिते-कनिते

एथन दिन रीते गहव गनिते-गनिते



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पत्रिका 'विदेह' १४३ म अंक ०१ दिसम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७२ अंक १४३)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मल्लो अछि ज्ञा जीरण अकावथ अचाणक
रिसवायन गामो शेरव तकिते-तकिते

पहुँचजौ बहि ज्ञानि केशा एहि टोरैष्टया
रिसवजौ ठैकाणा कथन चरिते-चरिते

कहाँ क२ सकनिये एकटाबीयो एक ठाढ़
रिकायन यवावी महन रँहिते-रँहिते

कहर कोण कथा ओव सुनायर की पाँति
शेद्धहि हेवायन गजन गढ़ा ते-गढ़ा ते

नियति केव हेवामे गुमवायन "टदम"
छिडा येलो सपणा पनक दूनिते-दूनिते
रर्ष-१७

8

कवेजक घब ठै खोनु कल
मिलहक ताग जोक कल

अहिक हिय-रीट टाली रंसय
जगह रंसरौक छोड़ू कल

रंसन रंसम हमर जीरल
अहि ये लहवम योक कल

कवय हरियाद "टदम" सुनु



सजन सर्यङ्ग जोड़ू कल

1222-122-12

9

आह्वर रँगन सबकाव नाटाव भेन जगता
र्यापार पोषित नीतिसँ कछु की एतग समता ?

गाम भूखन-पेष्ट देशीक खेत उंसव भेन छै
रौट्टी-बौदीक रीट उंपजन छै मात्र दरिद्रता

कन-कवखाणा शिहवमे चलेछ दिस-बाति, जे
प्रगतिक अछि मापदण्ड एकात भेन जगता

गाम ज्ञा रँगि बहन शिहव ज़रिकाक जोहमे
महाजनक र्याज-तव फुला बहने निर्धनता

ग्राम-रामिनी भावती किए गोनी रँगग षगव
कलेत छथि आग तेँ ज़ा केननि केहन मुर्धता

"टंढन" कक आह्वान सुवाजक एकरेव हेव
हंसती एहीसँ देशे खुशिनान रँगत जगता
रर्ष-१+

10

लहक सुत रौहि बखनिये कलेजक कोण ओकवा

12



रिसवत बहि भेन जकवा से रिसवि गेन हमरा

जिबगीक रौठे जकले आङ्गुव ध चनरै सिखेजिये

रिचहि रौठेमे से ढोडा पड गन खसितहि हमरा

कहाँ रौचन छे कतहुँ मोन आरै अणमोन-लहक

सौंसे छे खानी ठाकाक पुड आरै लोकक पुड ककवा ?

"टन्स" ठाका त२ छिये हाथक मेन सत्-सर्पङ्कक आगाँ

बहि रूमेड जे रात रूलेड तकले जिबगी हकवा

रर्पी-२०

11

घोष हुकब उतवि गेनग

जोत सगरो पसरि गेनग

रौहन प्रवरी जखन शीतन

हुक आँचव समरि गेनग

देखि हुकब ठोठ-नानी

आगि डाती पज्जवि गेनग

लेन नाजे हुक मुकन

अछकि हमरो नज्जवि गेनग



कग यौरण निवधि "टदस"

मोष मबुकव मनरि गोनग

2122-2122

12

जिनगी केव रौषपव काँठ सौसे गाडन डै

नियति केव ठौठ रौठ मगतो दफानन डै

माय-रौप भाग-रौकु डै मुठहि मय्यङ्क सभ

मोह-जान ओमवायन जिनगी गतानन डै

कनियो जू ठौठ रौनि स्रननक कियो मोनक

डुतहव योन रौनन समाजेमँ रौवन डै

बुष्ट-फुष्ट जौरण भवि आनन से रौष्टि देन

खानी हाथ आरँ देधि पविजन थौमायन डै

रूठ भेन दुवि गोन फकवा रौनि रौसन डै

"टदस" ग्लौड केहन दुनिया अभागन डै ?

रुप-११

13

मुवथ रौड । महाण ओ जे अपनारुँ कारिन रूने डै

अगण माथक ठैठव ठरू ककवहु नहि स्रने डै

14



आमक नीको अधनाह तारै करिगतग कहारै
अपण अधनाहोकेँ जगमे सभसँ नीम रूनेँ छै

छुओ-पाँच बहि रूनेँ किछुओ बहि मोल कनछपण
डूँट-नीटक भेद ल जाली मुठ सभकेँ एक रूनेँ छै

छन-प्रगट आ बाग-द्वय तऽ कारिगत गहना थिक
रौँ छलैत तैँ ओकबहि सभकेँ बिखगो ब्रनेँ छै

पव-उपकारे नीम बहैछ जे से अछि अम्मन त्रानी
"टन" अमनी त्रानी जगमे ओ जे बहि खुर रूनेँ छै
रर्षि-२०

14

शेह, सग खेनाएँ हमरा नीक नलैत अछि
शेह, ओमराएँ हमरा नीक नलैत अछि

मोषक टिनराव पव डी बाहैत जे मीठ-तीत
से भारहि मोवाएँ हमरा नीक नलैत अछि

सुखक-गीत दुखक-ठीस जिनगीक कथा-रौथा
जगभवि सुनाएँ हमरा नीक नलैत अछि

सुकजक किवीण चट्टी सुआ केव रिहाव कवी
धवतीयो जेठाएँ हमरा नीक नलैत अछि



मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रिहग-गीत गारैग छी कि रिबलिष स्रारै छी

"टंदन" ग्रा रौवाएरै हमवा नीक नछौत अछि

रर्ष-१+

15

कौआ कुचवग भोले अँगना सँम परेत उथिह सजना

छम-छम-छम-छम पायन रौजे खनकि उठन कँगना

मानुसक रौनी नछौछ पिगवगव ननदि रँननि रँहिना

गम-गम-गमकय तुनसक टोवा टाषन सन अँगना

बटि-बटि साजन कप मलोलव रँवि-रँवि देखन अँगना

ईकनी-काजव जूझी-खोपा नुआ-नरका टमकेत गहना

पहिनहि सँम रौवन दीग-रौती जगमग घव-अँगना

उगन टाष अममाण छदयमे उठन रिबह रेंदना

सेज सजौल रँष्ट तकेत छी घव एताह कखन सजना

"टंदन" सजनी गनधून रँसनि की मांगरै झूठ रँजना

रर्ष-२२

16

हमवा आरै गजोतेसँ नछौत अछि डव

टूप भेन तै रँसन वहे छी अह्वाव घव

नहि मोष अछि हमवा नाम आ परिचय

अपविचित छी जगमे तै घुमे छी निडव



मानुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ताकि लौढ लोक नामये पहिटाण लोकक
गुण-शीलक ए समाजमे छै कहाँ मोजब

सयँस्र बहि जकबसँ रँसन से समाग
तोड़नक भरोस ओ भरोसे छलौं जकब

"टँदन" जगक बीति गुमबाड ले जिनगी
सुनु खरँबदाव ! रँसन बद्ध रँखरँव ! !

रर्षी-१७

17

गुनिसक वातिक टाण सन चमकैत छी अहाँ
अँगनाक तुमसी टोवा सन गमकैत छी अहाँ

कखला मागक ममाता रँनि नमरैत छी अहाँ
कखला आंगिक धधवा सन धधकैत छी अहाँ

कखला सगी-रँहिसपा रँनि हँसरैत छी अहाँ
कखला जौरण सगिणी रँनि रूमरैत छी अहाँ

कखला अरँनाक कप धवी फकरैत छी अहाँ
कखला कानीक सुकप धवी डवरैत छी अहाँ

कखला प्रेमक म्दवति रँनि सिखरैत छी अहाँ
"टँदन" नावीक कप अलक देखरैत छी अहाँ

रर्षी-१४



18

बहि ह्नुवैए हमबा आरि प्रेम गीत
अतब बहि किछुओ हारि हो रा जीत

ठकठकी नगोल बहे छी बातिभरि
सगला बहि अरैछु कियो मसगीत

शुशान रैषन अछि हमर कलेज
पैसत के एमे सभ कियो भयभीत

जीरैत छी ह्नुदा रैसन छी ह्नुदाबिब
ह्नुदा संग जीरण करैत छी रातीत

"टंढर" जीरलसँ नछोछ आरि डब
मूढसँ हमबा अछि तब गेन पिबीत
रर्ष-१४

19

छनु एकरोब हेष बंगमाट सजारी
रैहूकपिया-कप धरी आ नाट देखारी

दुनिया रैक रूमत रैकजेले हमबा
हमबा अछि सख जे दुनियारै हँसारी

सुन्दर अलिखता तब जगभरि भेठैछ
हमर मोष जे पाठ जेरवाक खेनारी



मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

दुनियाक बंगमाट जे भ२ गेन निबस
आड एकवा ज़ीरन-बस रौव दुगारी

"टदल" ज़ा गुमसुम रौसन जे ज़ीरन
छनु अगल पव हँसि एकवा हँसारी
रर्प-१३

20

कमना-कौशीक धाबमे दहायन ज़िनगी
थान-कादो सनायन मष्टिआयन ज़िनगी

निशौ ताड ी केव मातन रौवायन ज़िनगी
माष्टि टांगुवसँ कोलेड तुखायन ज़िनगी

रौद जेठ केव जावन हुनायन ज़िनगी
एसी यव देखु रौसन घमायन ज़िनगी

हुँखर-ठांगव नुंगगठे ठौआयन ज़िनगी
देखु साजि-सन्हावन उविआयन ज़िनगी

देखु हँसैत कलैत आ थौमायन ज़िनगी
"टदल" कप अलकहू देखायन ज़िनगी
रर्प-१७

21

सगला लावक धाव रँहाउन
जागि-जागि केव बाति रँहाउन



माज-मिगाव मोहाग ले किछु

रिवहा-आगि कलेज जवाउत

बभमे चमकन जखल चला

हियामे प्रेमक झारि उठाउत

कोगली मोतिन झूठ दूमे अछि

कु-कु-फूकि कइ होशि उड़ौत

अचके रानम एनाह अंगना

"टंदन" सजनी मोन जूड़ौत

रर्ष-१२

22

नली अछि नान अहाँ केव गान जहिना सिधुबिया आम

अहाँ केव टान सन झूठवा देखि टाला रँगन प्रनाम

केशि काबी यष्टा घनघोब अमारस वाति सन नागम

लेन काजब सजन चमकन रीजूवीक झूठन घाम

जएह रौनी अहाँक ठोब केव टूमि कए रँहवागछ

महूआ गाछु पब कोगली सएह गारि रँगन सुनाम

डेग बाखन जतइ धवती माष्टि रँगिगेन उतइ टानन

कनमून पजेरै-नाँकावसँ अंगना रँगन सुबनाम



कमसम जूखानी देखिक२ सुभिरूँदि हमर हवासन
पीरै जेन लहवस रॉाकन भमवा भ२गेन रँदषाम

"टँदष" पथिक प्यासन प्रेम केव रॉै पव रौँखागछ
दियौ ल लहवस एकवा पिखा रौँसा खरॉ कलेजा-वास
रर्ष-२९

23

रौँटि खेमक गमाला रँजावमे
नाज-धाखौ सजेनक सटावमे

भाग-रौँपोसँ देखु नडँत छै
प्रेम देखु फुंसिक छै भजावमे

खरौँ मातोक मता रिकाग छै
लह-माता भसेनक गभावमे

जे कहरौँ नरुँगा समाजमे
से त२ नामी रँषन छै जुरावमे

देखि "टँदष" पडन छै रिटावमे
माधु-सतौ वगन रौँभिटावमे

212-212-212-12

24

हमत२ कसिते बही खरॉथिक लाले सुखा गेनग
खगल कानरँ पव देखु हमरा हँसा गेनग



लोक प्रदुतक जखन कहन ल भेन किछु
असगरे आग सत रीत अलले रँजा गेनग

माओन-रँदवी जे आगि उगठे धकि उठले
आग से आगि एकदूँद पसेनासँ पना गेनग

रैमि अँगना भवि वाति गलेत छुलौ तरेगन
आग से तरेगन केयो आँचबसे सजा गेनग

कतेको मानसँ पठरैत छुलौ जे गाछ "टंदन"
अँगनासे रोपन से गाछ आखिब हुना गेनग
रर्ष-१+

25

लोक रीत चनाक२ हनार अगुठी खेतसे प्राण लेलौ
मुठलि छन जे प्रेम-पिहानी से सलठी हम जगि गेलौ

सपनात खएल बली अहाँ जे आगरँ हनार सपनासे
सपना देखरँ सगल बहलै मिला अहाँ दहानि लेलौ

छन मोन जे प्रेम-बससँ तीजा गठरँ नूतन जिगगी
हम एहिसे सौवत मिमलेलौ अहाँ लावसँ सानि देलौ

मोन छन जे मुञ्ज गगनसे उँडरँ अहाँ आ हम संगे
उँडा लौ कत२ अहाँ जगि बलि हमरा एहिठाँ जगि गेलौ

हमरा रिषु जँ जगि सकी त२ जगिँ अहाँ सुखक जिगगी



तकिते रौठ अलीक "टंदन" काठेर जिनगी ठामि जेलौ
रर्प-२५

26

उजवन गाडी जकाँ नलौटे गाम हमर
दुस्पी मधल किअक कलौटे गाम हमर

गरकी कमिअग जकाँ डलौजे गाम हमर
बिधरा नाबी रँगन कलौटे गाम हमर

भवने-प्रवने हँस डलौजे गाम हमर
धुँखव-ठीपव तेन हिलौटे गाम हमर

प्रीतक पाती गरौत डलौजे गाम हमर
उकठा-पौटी किअक कलौटे गाम हमर

मिर्मल-मिहुन रौस डलौजे गाम हमर
"टंदन" किअ डेलौष नलौटे गाम हमर
रर्प-२७

27

कबेजकेँ पाखव रौषा मिअ
पिबीतकेँ आखव मिठा दिअ

मपष जन्म भरिकेव देखन
कद्वत२ की लावहि भसा दिअ

23



जडत डै जे आगि बिबहक

कहेत डी तकवा मिमा दिख

जगमक रंगी रँगक रँदना

कहेत डी नाता कठा निख

बकठन "टँदन" मोग रँगक

कियोत२ सजगीकेँ रूमा दिख

12-1222-122

28

मिथिना बाजक खातिब मैथिन नडरौ कबते

खुनसँ बिजले धवती मिथिना रँगरौ कबते

मिज माह्रुमि उँखोषक हेतु नडरि ते बहते

मागक बाजक खातिब संतति मररौ कबते

मिथिना-मैथिन-मैथिनीक स्नाभिमाणक बस्कार्थ

मिज प्राणहूक उँसेखा मैथिन कवरौ कबते

कमाना-गंगा-कोशी-गडकक सप्पत खा मैथिन

अनगहि बाजक सपना पुवा कवरौ कबते

होयत बहि र्थ रँदिना कौला रँदिनीक

"टँदन" ठोस प्रतिकार मैथिन कवरौ कबते

रर्षि-१+



29

कहियेसँ कतिआयन कलै छथि जाणकी

कहियेसँ भसिआयन हिलै छथि जाणकी

मिथिनासँ रिधुआयन नलै छथि जाणकी

मैथिनसँ थिसिआयन नलै छथि जाणकी

घब-घबसँ रौआयन हिलै छथि जाणकी

घब-घबत२ छिछिआयन हिलै छथि जाणकी

बामहिसँ डेबायन नलै छथि जाणकी

जिणगीसँ अकडायन नलै छथि जाणकी

अपबाध की कयनमि प्छै छथि जाणकी

टूप्पाहि जणक "टंढर" कलै छथि जाणकी

2212-2212-2212

30

किछु राँत एहन जे कणा गेन हमरा

जिणगीक नर माले सिखा गेन हमरा

सपणाक दुनियाँ डनहुँ सुनैत सुना

तखनहि उठन रीछि । जगा गेन हमरा

पानन अणन पेटक करैए हकुरो

आलाक हित जरीँ रूमा गेन हमरा

25



अप्राण हवथ हवथित बहेठे सत का

अनको दुखसँ काशरँ रँता गेन हमबा

"टंदन मयज्ज जीरण रँगय षहि अकावथ

जिणगीक सत मकसदि गणा गेन हमबा

2212-2212-2122

31

लैषक नीव तीजन टैव जह्मणा तीवमे

कवेजा म्नीव सीचन रीव जह्मणा तीवमे

रैसन नीड कूक अनीव जह्मणा तीवमे

नागन तीड मुक रँलीव जह्मणा तीवमे

आसक सीव पुष्प, लै नीव जह्मणा तीवमे

टासक सीव गरी ठे सीव जह्मणा तीवमे

देशक रीव तेन हकीव जह्मणा तीवमे

लताक तीड गिबेठे खीव जह्मणा तीवमे

मनजे खुष द्रौपदी टैव जह्मणा तीवमे

नागन घुष काया प्ररीव जह्मणा तीवमे

रर्प-१७

32

मन रीणा ताव मंकाव भवन



मैथिलजनक हुंकार प्ररैन

रैहूत आँखि केव लोव रैन

रैहूत जगक दूकोव सहन

आरै उँटित प्रतिकार कवरै

शत्रुक प्रहार जूँ खून रैन

निज अधिकारक हेतु नछरै

सौभाग्य जूँ प्राण तियालौ पड़न

मिथिला-बाजक त२ माँग अछैन

"टँदन" मैथिल नछि ते उँठैन

रर्ष-१२

33

मोष एहन जे माणरै नहि करैए

आगि रिवहा तैँ साँझामे जलैए

लोव नहलै छै आँखि से, कँठ सुखलै

बूँझु भवि लहक जेन तैँयो मरैए

जेठके बौद्ध जकव डारवि जुलेलौ

रिषु रँसाते से पात आसक नरैए

डारि पव लहक हवन सँझु डन जे



पाथले टोठागत मडल हब नबेए

बाँठ 'टंदल' ठकठक अहीके तकेए

मोष ररसन ले आम किमहु धरेए

2122-2212-2122

34

बाति तरेगण गमिते कठै डी

आगि रिवह के जडा ते बहे डी

बाँठ अही के तकिते बहे डी

कग अहीके मजिते बहे डी

ररन रताहे हंसिते बहे डी

कोनहि ररसन कमिते बहे डी

गीत रिवह के गरिते बहे डी

तामम मोषक पिरिते बहे डी

मोषहि अगल मडा ते बहे डी

'टंदल'नागय जिरिते मले डी

2-1-1-2-2-1-1-2-1-2-2

रर्ष-१२

35

मनयानिन केव मदिब गंधम श्राम रोग उगटाव कवर

दूषित राश अरकह मस जे तकव आर प्रतिभाव कवर



जडरत रँनन जे जरीन जगमे तकवा पुनः रँना चेतन

मधु-पवागसँ नहाक२ ओहिमे नरन उँर्जक सँटाव कवरँ

निज अरनरँन हेतु जगायरँ रिसवन सत श्रेम-शक्ति

कर्मक रँनपव रिजय प्राप्ति हित कर्महाङ्ग हुँकाव कवरँ

बहत आरँ नहि हावन-थाकन घब-रँसन मानरँ एकहुँ

चनु आरँ कर्मक प्रकाशिसँ कविखन घब उँजियाव कवरँ

एकप्रा एकनिष्ठा श्रेहसँ निष्ठुन भारहि गाँथरँ श्रेमान

श्रेमक हन भेठरँ डै निश्चित "टँदन" जगत प्रचाव कवरँ

रर्ष-२४

36

आँधि खुससँ भवन जेना

काँष्ठ हिवदय गवन जेना

पानि खोतय अवन जेना

आँगि नगए ठवन जेना

लाव सोथरि भवन जेना

धाव खुससँ भवन जेना

गाडु डनए फडन जेना

आँरँ नगए सवन जेना

गाम डनए सजन जेना



आरं "टंदन" गवत जेना

2122-2122

रर्ष-१०

37

जकले पाग डुरो तव-उंगव

सह गृत कमोखा धेनके घव

गवचव रंगले अंगना घव

ठाठ उछेहन देह बहि पव

ठगठग कोठी ओ रंखावी-ठक

उंनठन रौमण तनमाघव

बकठे लना सठकन उंदव

रौदमा उंकामी दर्राग रौंगव

टंदन केषाक२ जिगगी कठत

ऋणी-पैचसँ की चनत गुजव ?

रर्ष-१२

38

मोण केव रीत सदति निथिते बहरै

टोरैष्टिया ठाठ गजन कहिते बहरै

जिगगीक रौंठमे गडते जँ कठ-कुने

हँसिते गुनारै मण गमकिते बहरै



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पारिषदक ई पत्रिका 'विदेह' १४३ म अंक ०१ दिसम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७२ अंक १४३)

मानुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

समाजो घिसिखाओत कादोमे हमबा जौ

कदरौ कगन रँसि हूजाओते बहरौ

कतरौ मणै-रिहाडि आरि जाड बसुामे

झदा तैयो दीप आसक जेमिते बहरौ

'टंदन' पाखव-समाजक छातीए पिजा

कनसक धावसँ शत्रु हसिते बहरौ

रर्ष-१३.

39

आरि सुतन लोक जागि बहलैए

तै त२ टोव रौजोहे भागि बहलैए

देखु नागन तीड टोरैष्टिया पव

रैठा माँ-रौगकेँ रौनागि बहलैए

रँजावक तीडमे तकेत एकति

सुतस जेन लोक जागि बहलैए

टैतक गडरौ स्रुष्टाह भेन घब

भादरँमे धधकि आगि बहलैए

तरँन धवती दहेते ह्फेबोसँ

सुगबकोणा मेघ नागि बहलैए



मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जबलै घब दहेलै डीह "टंढर"

उठलै लोक का लै भाषि बहलैए

रर्षि-१३

40

गुप्फ अन्हाव बहि हापो-हाथ सुनेए

आमक रौत कोष पविजलो हूबैए

जकवा जे सरस्र कएनहुँ अर्षण

मैह हमरा मतनरी लोक बुनेए

खुण पसेना रौनरी ह्रदा डी दविद

भिखरगा रौमैए धनिकता बुनेए

कतौ कबोष्ट हेलै लोक मडक पब

कतहुँ हकुरो पनग पब सुतेए

केउ भूखे स्पेष्ट बकठन प्राण, कालै

"टंढर" पाठकक चुर्षो खाए हबैए

रर्षि-१४

41

बाति सगलमे प्रियतम एनाह

कब-कौशिनसँ हमरा जगेनाह

काँट निम्र टूँठन मल कडमड

उँडि-रिँडि नगा अगल ब्रुकनाह



मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

देहक पाणि रैनि रैहम पसेना

अधवतिये मोष प्याम नगेनाह

कसमम आदिंग बथ नागि फछेन

छेह सगव देह बह गडेनाह

हमवा रंग कत खेन खेलेनाह

"टदन" तखन जा मोष जूडेनाह

रर्षी-१३

42

दू नरणी केव खेना देखु

नागन लेनम लेना देखु

हूमि छेनम छेना देखु

रैनजोर्डा क समेना देखु

मनु गुरु रंग छेना देखु

नाच करे अनरेना देखु

जीरणक संधारेना देखु

काले अनाथ कोरेना देखु

रियजे नागन मेना देखु

अमृत भेन करेना देखु

रर्षी-१०



43

फूल ले रँगलौ त२ की काँठे रँगि गडेत त२ छी
प्रेम ले केलौ त२ की संग हमर सहेत त२ छी

सौँसा ले हँसलौ त२ की गबोडमे कलेत त२ छी
अन्हाव छे घब त२ की दीप रँगि जडेत त२ छी

अपना ले सकलौ त२ की संगमे बहेत त२ छी
त२ ले जाग अणक संगी से सोटि मरेत त२ छी

सुख ले देलौ त२ की संगे दुख कष्टेत त२ छी
मीत ले भेलौ त२ की कसममे रौसित त२ छी

बूमि क२ रँकलेले हमरा अहाँ हँसैत त२ छी
छी अकछायन त२ की रात तेयो सुलेत त२ छी
रर्ष-११

44

आखर आखर सजा निथे छी गीत अहाँले सजनी
टाँचव पाँतव हम तके छी प्रीत अहाँले सजनी

अपन कोठक कोरि माँठे सोवत पुनि मिसलेलौ
लहक बसमे बीजा गढे छी बीत अहाँले सजनी

अहाँक कपक आगाँ हम हारि गेनहुँ अगणकेँ



अप्लाव हावि रीमावि निथे छी ज्ञीत अहाँले सज्जनी

मधुव गिनणक रेंना कहियो त२ मधुघठ पीरै
मोचि-मोचि घठ-घठ पीरै छी तीत अहाँले सज्जनी

अँगणा, घव, दगाव सजा रौठ तकेत छी रेंसन
"टदल"लहक रूँल तके छी शीत अहाँले सज्जनी
रर्ष-१६

45

रौठी महग महगे वृष भेन छै
रौठी स्रनभ स्रता वृष भेन छै

सौँसे शिव सहस्र लोक गजगज
गायक दगाणा-घव वृष भेन छै

प्रगतिक पथ अग्र्याचार अडन छै
लता समाजक जग वृष भेन छै

थेती कवय जे से दीन भेन छै
रेंगणा रेंगावी दूष भेन छै

कवणी अप्लाव बहि देथेत लोक छै
"टदल"फूमिक खातिव वृष भेन छै

2212-2221-212

46

35



मानुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मोषक रौत मोषहिमे बथेत छी
दुष्पी नादि हम जिनगी कष्टेत छी

चकमक जगत नागन टोह लोकरै
घब अहाव टैगक निष स्रतेत छी

मूर्ठक जेन आगिन लोक छै शिल
हम सता जलरा-जे फबेत छी

लौचन खेत डारब-डीह गजब-जे
तेयो केस किता दम नडेत छी

जूना जवन ईठन एखला रचन
"टदम" रौन ते ईठन रजेत छी

2221-2221-212

47

ककरो त२ जूना खाँत भेन छै
केयो था-था अल्पयाँत भेन छै

पिसा बहलौ देशिक जगत
कानून-राबस्ता जाँत भेन छै

बूँडा रँके लोक लता रँगलौ
रिकास लषाक खाँत भेन छै

समाज बूँडलौ रँक खतासे



संसद भोजक पाँत भेन छै

रर्ष-११

48

द्वयक धारसँ रैसी झरक छार छै शीतल

लेशक लोवसँ रैसी देहक घाम छै तीतल

देहक खुससँ रैसी लोकक मोष छै धीपल

अप्लास मोचसँ रैसी आसक मोच छै बीतल

ककरो लोखसँ रैसी ककरो गत छै बीजल

खुसक छापसँ देखु सगरो राँछ छै तीतल

ककरो खाससँ रैसी कतहु आस छै रौठल

ककरो सगव जिमगी राँछ-कात छै बीतल

ककरो रौल समदाँलक ताम छै भवने

गारैस "टदल" उदसनी जग बुने छै गीतल

रर्ष-११

49

हम ककल छी लेखनी ठामकल अछि

सभ कपला ठामे-ठाम दवकल अछि



मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रगतिक परिचा आग रिच रौष्ट पव

अष्टाचावक ठा नागि अबकन अछि

भोगी भुगति सब धरल रौणा योगीक

रौष्टी प्रजाक खाग देखु सबकन अछि

कान-शीन तग-राग संकटित भेन छै

रुदा संकीर्ण मोट मोसै हनकन अछि

"टदम" लोककेँ निश्चय प्रतिकार चली

कि हव अलकए मेघ ठनकन अछि ?

रर्षी-१३

50

दासरी छेष्टसँ मासरता खरुचन जागए

टांगुवक लोकसँ मसुवख रँफुठन जागए

भजावि-भजावि रिचाव लोक भजाव तकेछ

तेयो देग-देगपर भजाव ठकन जागए

नएंगठे नटेत लोककेँ प्रेषाण कलँ छेक जे

नाट रँठन जागए आ तेन सधन जागए

जड । जातीकेँ निकलेछ जे पूँआ असमासमे

ओहीसँ तनु पृथ्वी हिमानयो घमन जागए

"टदम" रोगायन छाती रँफुठत मोन लोकक



रैस पाथवक मकान एत२ रैठन ज्ञागए

रर्षी-११

51

लैणक काजव पव मोहित छै सगरो जगत

जडत डिर्गिया केव मोषक मवम के रूमत ?

मदाङ्ककेँ सरोकाव षहि होगत छै ककरोसँ

ह्रैव सबकावकेँ केना दीणक नटावी सुमत ?

होव गान कावी काजव देथि अहलेले हरक

तखन कलैत मागक आँथिक लोव के पौछत ?

काँख तव ब्रुकोल बहेछै लोक पानिक रौतन

तखन ह्रैव टोड़ीमे के गलाव सौथरि खुमत ?

गाम भ२गेलै सुन्न ह्रदा करै चकमक शैव

"टदल" ज्ञ रैठत रिषमताकेँ सम के कवत ?

रर्षी-१४

52

माणरताक डेण पकडि मल्लवख रैलैत भगराण हेते

ह्रदा, पतितकेँ पशु कहरै जँ पशुओक अपमाण हेते

मुवख भूपति रैषि रैसले ब्रुधकी नागन टाँकाव छै

तखन जगतमे अनी कछु की रिया केव सणमाण हेते ?



बामक मर्यादा तोड़ि ताड़ि गौतमक रिचाबकेँ छोड़ि छाड़ि
गाँधीक देखाओन पथकेँ लागि की मानरक कर्णाण हेते ?

अंगना रीट देरान रँगन छे दृष्टि गेलै दनाण प्रवणा
रेंडन फवकी-छाँ छे सगरो खेब कत२ खरिहाण हेते ?

द्वय-देयादि मोनमे जकवा जे ले रँगन समाग ककरो
"टंढन" तकवा कहत दरिद्र उँट भलेहि मकाण हेते
रर्षि-२२

53

मगनक काजब लाव घोषिक२ मोमि रँगलौ
भार कलेजक आखब-आखब निधि पठेलौ

बूमनहुँ अहाँ बिदेशमे जाक२ खुरँ कमेलौ
रूदा कहुँ की गामहि सग लेह ओतहुँ पेलौ

छे सुरिवा कल कना गाममे शिहब अपेक्षा
रूदाकी कहियो सूटा भोजन शिहबमे थेलौ

हम रेंकारे देखि-देखि सपना रैन गमेलौ
अपन जूखानी अही आसमे रेंवथ गमेलौ

आण बूमैत छी हमवा अहाँ कोला राँत बहि
"टंढन" रूदा केनाक माग-बाँरुकेँ रिसलेलौ
रर्षि-११



54

झकले देह केव घाम टाणन सन गमले डै

तकले धूँनी मनेया स्रसक स्रथ रँवम डै

अणकव माथ पव रँञ्जव जे कियो खमले डै

अपल रौनीक वृत्ती से अपल घव जवले डै

नरतुविया डै रूँडा रँक रूँठ-प्रवाण कह डै

ओहो डले कहियो लोमिखुए मेलै मोण वहे डै

दूरय करवो टाव केयो भामन तीत सठै डै

धिडकी रूँन निहारे कियो आणक आडा डँठै डै

कठी-माना टाणन-ठीका पोती-रुती खुर सजे डै

लेकिन नभंगठ-डुखनकेँ देखिते षाक ऋले डै

कन्यागत डै कानि बहन रवागत रिहूस डै

कियो खून रँटिक२ देनके कियो स२ख प्रवले डै

झ की भेले जे सगरो खानी रँहकनिया घुमे डै

"टदन"एले कनिकान जे खानी खुलै पीले डै

रर्ष-१+

55

ओ जे रँताह रँसन डै सडकक कातमे

एकोवती षहि नाज डैक ओकवा गातमे



मानुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पेठफुसिया जल जे सुतन एकतमे
दुगयो दाषा ततक बहि ओकवा पातमे

दु जरणी पीरि रँले डैक जे नृप सँममे
तकवा भेठै ले उमनन अकुआ प्रातमे

अगला घबमे कसियो मोजब ले जकवा
दिसी केव सबकाव डैक तकवा नातमे

जकवाजे मेहन्ता नराना अगण खेतक
"टदम" देरै ले पएव तकवा जिवातमे
रर्प-१७

56

आखव-आखव गानि-गानि की निखरै हम
मात्रा-रँहले फानि-फानि की निखरै हम

मागक भाषा पुज्य जानि की निखरै हम
अप्पण छाती तानि-तानि की निखरै हम

करिकोकिकनकेँ माण बाधि की निखरै हम
मिथिना-मेथिन ह्यह ठानि की निखरै हम

फगुआ-टेती गारि-गारि की निखरै हम
बोदी-दाली कानि-कानि की निखरै हम

तमन सगणा छानि-छानि की निखरै हम
"टदम" भारहि सानि-सानि की निखरै हम



222-2212-1222-2

57

रात की भेन एकरोव रँडा ते चलि गेलै

लहक तागसँ सयँग सजिते चलि गेलै

बही सचेत त' ह्रुदा रूमलौ बहि मबम

अनचिन्हार ममगीत रँमिते चलि गेलै

हुन बहि त्रात हमरा कोला वीति-पीतक

अब कहिया अ पिबीत रँडा ते चलि गेलै

जे भेलैक जेना भेलैक रात छोड़ "दम"

जिगगी जगु संगीत त सजिते चलि गेलै

रर्ष-१७

58

कहू, की अहाँ अप्पन संग देरै

जीरनसँ बरन उगंग देरै ?

हम भठकन राँ-रँथेली डी

पथ हेबरँ हमरा संग देरै ?

बाति जागय अ धुँकव-धुँकव



ए आँखि सगल सतवंग देरै ?

"टंदन" ज़ीरल जूँ काठ रँगत

सौबल मिमवा अंग-अंग देरै ?

रर्ष-१२

59

जगलबिमे सरँ रँस दोसबकेँ आँकयमे छै नागल

तुजि जलतकेँ लता तुझ्हा हाँकयमे छै नागल

अगला घबकेँ अठरँखल से रँचि भेलै ली जकवा

से अलकव देरौनक तुबकी नाँकयमे नागल छै

जकवा अंगा-ठैगी जूँडलै नागठ रँमि लचगत छै

नागठ छै से नाँगरौ खातिव ठाँकयमे छै नागल

तबजे-पुबजे छै से माँमे ठामलि रिंथा हनीवय

निवधन रँरँस लचवज छै से ठाँकयमे छै नागल

एली ओली दहिना रौमाँ घुमरँग छै जे जलता

"टंदन" सगरो तबजे गप्पी हाँकयमे छै नागल

१४४१ दीर्घ सत गौँति मे

60



मानुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हम भाग अहाँ छी रहिष हमब

दूनु गिनि जितरै जगत मगब

गाम-मगब घब डगब-मगब

हमले अहाँसँ छै छहब-महब

पवर्गट कियो कतरौ बचतैक

हमबा षहिए पवर्गह तकब

आशीय अहाँक जूँ बहत रँषन

पुनि छेकि सकत के रँष्ट हमब

बाथीक मगथ कतरौक गहब

"टदष" ले ताकत रँकब-रँकब

रर्ष-१३

61

कबेजक थीस कहरै ककवा

कहरै जकले रूमते हकवा

मकबजानमे हँसन जिषगी

जगत भवि छै भवने मकवा

करुणा केनके सथ पुनेनके

माबन गेलै 'रँजिक रँकवा'

रँष्ट बहन छै रँखवा-रँखवा



भैरव छै जैह जतहि जकवा

"टंदन" सता पब जे छै रैसन

किछु बहि आरि मोन छै तकवा

रर्प-१२

62

टुप्पा बहनसँ दुनिया नीक माले छै

लेकिन टुप्पाके दुनिया ले ग्दाले छै

हंस छले बाजे छले रैथी लेहबमे

मान्ख बसिते देवी किएक काले छै

रैखव सुतन बहे छै राँठ-घाँठमे

संपतिमानी जकवा पीछर जाले छै

शोधित नारी मरि गेन नगाक हप्पी

शोधक, समाज ओकले रेखा माले छै

अजगत लोक अद्धुत समाज छैक

बहि-बहि "टंदन" एतरे ठेकाले छै

रर्प-१४

63

हब उठौनहु, पालो ठगनहु, मदहा नाधि बहन छी

गोना आ मिलेरिया रौदक जोड़ । हँकि बहन छी



टामि-सगावन, खेव तेखावन, आरि टोमामि बहन डी
मान सतविया कविया कामोव रीखा डारि बहन डी

तुष्टकनमा-माय रीड । प्रेमसँ गनपिआग न आगनि
रैमि पीगव तव दुहू गवानी हूँहा हारि बहन डी

जगवनाथ डे अगन हाथ गंगाजन डेक पसेना
एहिँ मिचन हम जजाति तेँ जुमा रीँडि बहन डी

64

रीतन फगुआ, चनु आरि वरी कष्टय जेन
रूँडे खेसारी सविसरि ओ तीसी साडय जेन

भवन दुपहरिया केहन रीँडे पडरी हन-हन
चनु कव' जेन दण गहूमा बाहडि साँडय जेन

रिँडकी काकी भास नगा, गारिधि टैतारव
रैमनि माँमे आँगन तिमियओरि खेँडय जेन

केहन मोहनगर नागय नरका रूँडेक सतुआ
चनु टेरिँडिया रीँडे-रैँडेलेके रीँडय जेन



साँस पडल पुनि पुवरौ पनछैल कोउनी कहके
रौनिहावक प्रेम-पुनकित मस कहै बाटस लेल

65

कयल कोन पाग बलि ज्ञानि अ की भेलग
नगेरौ लेह जकरेसँ ककरो मीत रैनि गेलग

कवय डी प्रेम कतरौ हम ओ ज्ञानि बलि सकल
आ कि ज्ञानि-बुमिक अलच्छ रैनि गेलग

मिलहक ताग कतय गेल सखँक की भेलग
जीवगीक बाग-बडस सडैलै प्रीस रैनि गेलग

जग डैक सत "मूठ" रौत बुम ले "टडल"
हुँछै डै सुग्न सहस्रौ एकठा हव हुँछै गेलग

66

हम रैसले डी अन्हारे
डी हेलि बहन ममथाले

तेजक मीता-भजाले
जोड़क संग परिवाले



जाधवि छन धनक अग्नौले

खुरे भेष्टगत छन शिवाले

आग एसगले गड़न छी

एहि भबले रिट-रँजाले

बहि रँचन कोला अघाले

"टँदल" कर्मक मावि थिहाले

हज्ज

1

कनिया हन्नाव रँड गुरुरन्त्री रूमा गेन हम्बा

किएक क्कमावहि लोक मरैए जना गेन हम्बा

नीती जहिँ घबमे पैसनी तहिँसँ छी अशीत

कोति घबमे मटन तेहन जे मेष्टी गेन हम्बा

मास्र नछी छनि सौतिन सप्पव नगनि चबराह

गावि अलौकिक हुँका मुँहक नज्जा गेन हम्बा

संग गौतनीक नछिँ उँस्रवक बहि पबराह

आरँत२ देखु दुनु भागयो रिट रँमा गेन हम्बा

रौ दैरा बहि जगजौ किछु यँसजौ रँहाहक यँस

"टँदल" क्कपक माया यँसवी नछका गेन हम्बा



2

गुनकजी रैमनाह खोनि खैठान

टेनरा रैमनाहि गुनक खैठान

घुव जलोनहि गोथी केव ठान

दुध रैटिकए तेनाह तेनाह

गमकन जा२क२ तेनाह केगाव

मान गोमिक२ तेनाह मानागाव

गुगुगणा क२ हूँठनहि तान

गुगुगान सँ कसोयाक ठान

घी-दुध पीरि तेनहि देह तान

आरि अखाड १ रिट ठोकथि तान

गुनकजी गजरे वंगतान

ठोवक रंग-रंग बागथि गान

गुनकजी रैमनाह खोनि खैठान

तेनाक गुँजीओ तेनहि गतान

रौव गजव

1

टाव गव छै लोखा रैमन

माँस अंगना लोखा रैमन



घृष्ट-घृष्ट खाधि दूध-भात

मागक कोवा रौखा रौमन

बाजा-बाणी स्रनधि पिहणी

मगयाँ कोवा रौखा रौमन

उ-ना-मा-मी मिथधि-पट्टधि

रौरौक कोवा रौखा रौमन

स्रपा-मेना मंग थेलौ छधि

"टदन" अँगना रौखा रौमन

2

हकक-कु जखन हवगा रौजन

किविण स्रकजक मुँहमेँ नागन

रौखा डकनक कोगती रौजन

अधि मिडित दूधहन जागन

महा-मोणाक कयनमि जमथे

गमहन गेमधि घंठी रौजन

दीदीजी रौह्ण नीक नलौत छधि

मासुव जीक छुडी नए भागन

काण पकडि क२ उँठक-रौँठक



तेस्यो खेत पव मोष छै ठाँगत

"टंढर" ठंर-ठंर घंरी रँजले

छुंछी भेतग घव दिस भागत

3

रौंग रँजय छै ठंर-ठंर-ठंर

रँगवा डँडा हंर-हंर-हंर

मवणा महले मर-मर-मर

रौंस रँजय छै कंर-कंर-कंर

मिा चलय छै घंर-घंर-घंर

मौंग मरवले मर-मर-मर

चूमा डाती धंर-धंर-धंर

डवसँ कागय थंर-थंर-थंर

पप्पा एनखिन भागि गेल डर

रौत पदरौंग चंर-चंर-चंर

4

रूँटी पहिबनक मोष गहना

रौंश्राक डाँव मुले नाग हूँदना

माजि-बाजि दूनु गेल मेला देखे

हाथमे पाग छले रौंरह अना



झवली-कचवी आ रतासा-जहु

बंग-रिबंगक कीषन हुकषा

सुनन सुना आ बाट देखनक

"टदन" घुमान घब मोषा-छा

5

साँम पडन लेमि पिगब पब टिड करेड पटेती

सुगा-मैषा रारा बटाओत रंगना करेड घटकेती

हुदकि-हुदकिकर हुदी बाटय हेब हेते रणभोज

कोआ पिजरेड जोन कोगनी गारि बहन डेक टैती

रंगवा-पवरौ अपत्राँत अछि गतजाममे नागन

डकलब लेमन मोटि बहन केना हेते फूँमेती

शोबकी पिगली रजा बहन डे टिँली टोन पीँटेए

मोब नटेडे ता-ता-बैया "टदन" अडुत अ फूँमेती



6

गरका हती गरके गरराव
परिव कए रूँटी भेन तैराव

ननका हरीताक गहनक जूझी
रौजे कनमनुष पायन मन्काव

हाथक रौना खन-खन-खनके
ठम-ठम चटिके गेन रैजाव

ठोनक-पिपली आ तमशी-नाट
सुनन देखन हवथ अगाव

रौरौक हाथ पकड़ि कए रूँटी
प्रदूदित घूमय छै-रैजाव

7

मन्जिद जखल पड़न अजाव
कोगी ठननक पवाती गाव

कोआ डकनक खेत खरिहाव
रैगना खता रिट कवय न्नाव

गव-गव दू दूँड रैखाव
ठक-ठक पड़क नगोल धाव



बौरा डुधि बौरा ी बौराधि मटान

बौरा अंगनामे नगारधि पान

दूह-दूह नान पूर अममान

'टदन' जनथेमे दूध मथान

8

द२ बहन डी अंगन शिपथ ले कानु रौआ

जेरनटूस न२ पप्पा गुताह फटले कौआ

हम त२ मय डी सत, रुदा रेरिस नाटाले

कीनि थेलौणा देरि कत२स नहि अडि टौआ

भवना नागन थेत महाजनक तगेद

हैव केनाक२ सथ प्रबौताह रौप कमौआ

अही प्रवासरि सथ मेहन्ता आस थेल डी

अही जूड सरि ड्वाती रिकि२ पूत कमौआ

करुना, पाती, रिणय, लहोवा, करेडी भोना

जेनगात "टदन" चठ सरि खुरि चठ ीआ

रर्प-१७

9

डैयारै नरका बुमिठ आ हमावा दीदीक हैवण



ओत२ सौंसे गाम युमे जौ हमबा अंगलामे रौठल

चूसा-चेकी, रौतल-रौसल, आगसँ ले कबरौ हम
हमरो चाली कापी-पिन्सि, रौठाकेँ देनही जेहल

रौथा डूढ डालि खेतौ हमबा ले दूधा पवगठ
जै ले कबरौ ठहल तखन नगतौ मोल केहल

रौहूत सहनियो आरि ले चनतौ तेहब दुलती
हमरो चाली रौखा आरि ले चनतौ कनडपण

लौ माय हाग रौदलि गेलैए रौठी ले रौठासँ कम
"टदल" गमकेत भरिया बचरौ हमरौ अणन
रौपी-१६

10

एकदिस हमरो हेतेक मकान
एकदिस हमरो हेतेक रौखान

एकदिस हमरौ कीसरँ समाण
हमरो घब रौगते पु-पकराण

एकदिस हमरौ रौनरौंग टाण
अतबिष्कमे हेते हमरो दनाण

सभकियो अणल कियो नहि आण
हमरौ रौनरौँ गांधी सन महाण



बिद्या-बैतुरक जेन अन्नसंधान

कवय जे "टंदन" रंभय महान

बर्ष-१३

11

टिका करंछी खेनरंग खेत पथावमे

हमब नाह चमतेक उमती धावमे

गमकनसँ जखन घुमरंग सँममे

बौरा संगमे घुमरंग धावक पावमे

आमक गाडी खोपड़ि तब मचाष पब

काका संगे हमहूँ बैसलै बखरावमे

गीजन-गाँवन हम बहि खेरौ बँधीमे

माय ली हमरो साँठिक दहीन थावमे

झबली कचवी मिस्री खेते डैक सेहनुा

"टंदन" तै डैक जोठना जोठत भावमे

बर्ष-१३

12

माय ली हमरो कीसि दे ल चान एकठा

दे ल थुडक गुरी हलका मथान एकठा



मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

चमके गजोबिया नाली छै कोजगले छै

बौरा हमरो दीखले थिनी पान एकठा

चकलेठ-बिबुठे भ२ गेली कत महग

पप्पा हमरूँ कबरंग दोकान एकठा

छेठको चटा केत२ थारै भ२ गेली ब्राह ली

मैया हमरो कमिया क२ दे जूखान एकठा

दान पब घब हेते तावा पब दमान

"टदन" हमरूँ भवरै उँड ल एकठा

रर्ष-१३.

13

पकडा क२ दारा चमग छै

खले ठेहियाँ भवग छै

मधुव सलके रौनी नाली

जखन माँ-पप्पा रजग छै

चटा क२ छाती पब ककाक

भुआक२ नगले हसग छै

सुगा मैना जखन राजग

सुमिक२ थगड ी पिठग छै



मलाबथ सभठी पुरौते

रैगस के 'टंदन' गुणज छै

रर्षी-१०

1222-2122

14

भोव भेलै शोव भेलै

काँटे निम खोव भेलै

माघ मास शीत जन

दहो-रहो लोव भेलै

काँठे कँठमे गजलै

भोग बहि मोव भेलै

भैस भेलै पारी तरे

छाली डाढ़ी घोव भेलै

खारी रौपी पिठैत छै

माघ मोष घोव भेलै

रर्षी-+

15

ओरुव गगन रिच मेघ जहिना उमकि बहन छै

एरुव मगन मम रौन तहिना हृदकि बहन छै



Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका 'बिदेह' १४३ म अंक ०१ दिसम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७२ अंक १४३)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

धधकति छलै जे माँ कलियो अगिष-कल्ल मण

परिंते अगिषक रूँ मण-मण गमकि बहन छै

खिनखिन दूरव नागय छलै पतमाड कानमे

खनखन हँसय छै आरँ फुनगी हूनकि बहन छै

दरँकन छनय जे मानभरि रिंन रीट रँगरी

घुँरी भवन जन पारि जँह-तँह कदकि बहन छै

धुँक-धुँक निहावय रँगम "टँम" कोव रँगरी

दारँक कगनी पारि पव जे तसकि बहन छै

रँ-११ -2212-2212-2212-12

बराग

1

भामन सञ्छी सगना लोवक धावमे

कँठ दरँगन जग्न हमार गृमनावमे

रँगन छी एकानि निजहि परिवारमे

सोगव थोँसि बहन छी धुँठन चावमे

2

लोक भुखले सँ टिकलेछ रँ पव

छै ठकलेत सबकार सुतन खाँ पव

निम धुँठेछे लोतक आरँ केरन

कोला आम जगतामँ नागन चाँ पव

3

अगन महीय कवहरिआ नाथरँ



मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सुगले गुरू सँ टिगरी पाथरै
छी सुतव देशक रानी तै
की रँवछी सँ याना गाँथरै ?

4

रँक रँगु दरौग छनि गेलै ठुकर ज्ञाष
श्रीहमे हृदा कबजा नऽ भेलै लो-दाष
थाय अथहे श्रेष्ठ कठनक जिषगी सकन
मवन तऽ सौजणी मारैत छै सुवकाष

5

लोकसँ सिउ आँचव आरै निछोर्छि दिउ
जँ आँगुव कियो देखलै कब तोर्छि दिउ
बागु भय सीता सैयाक सगथ धक
मिथिना बाजक शत्रु हृष्ट मछोर्छि दिउ

6

छुँठन राह रँहलै गामक गाम ह्येव
गेन दहा जिषगी कतेको ठाम ह्येव
कागतक नार सबकारो तपेव छलै
हृदा, राँटि भासन कतेको ज्ञाष ह्येव

7

दु छुँक कहलौ दु हाँक भेन सयँह
दृष्पहि जँ बहलौ ह्योँका गेन सयँह
पस भवन थीसैत पनीसेत घार सष
सलक शून गाँछि रँहा देन सयँह



8

संध्या-रौदर, काठ सिबिखल घसै छी
भोव-साँस आवती घबिघण्टे पिठै छी
भाँग पीरि मसुक तिवण्ड जेपे छी
कटि-कटि रोहू मुड़ । रुबिघण्टे छेते छी

9

देखु पियरुव रौतार जमानाके
सूँस मदिब भवने ताड़िखानाके
कलेत लोक हँसी किनरौने कुरैरौड
पेठे काँठे जोगाओन खजानाके ।

10

दुधसँ रौसी झान नलीए ताड़िमे
खेत रिकायन नागन हाथ घवाड़िमे
एखन त२ अमृत नलीए टिखनसंग
सूँसरो जखन नीरव सडत सूँठिबीमे

11

ताड़ि छानरँ डोडा छानु निज रिटाव
दाक ताकरँ बापि तानु संझाव
अप्लास घब जारि सुँधीमे छी रौसन
नजबि उँठा देखु जवन केहन कगाव

12

सत अहाँ कखनो मोन नहि पडैत छी,
किएकत२ सदिखन मोलमे बहैत छी
हुन रँसि सदिखन ह्रदयमे गमकैत छी



अहीक लेहक जेत सँ हम चाम्केत छी

13

अहीक प्रेमक छान जीव चह छी
अहीक आँचक हरा पीर चह छी
अपन हाँठन कलेजा सीर चह छी
अहीक लेहक शिवाँ पीर चह छी

14

कलेजक तहमे टोपेत बखनौ जकवा
खून अपन पिया पेमैत बहनौ जकवा
जूआणीक मद रौवायन सह नछौछ
पड़न एकात समाजमे रँननौ फकवा

15

सूर्यक प्रखर बग्गि सन चाम्केत बह
शिवदक गजोबिया सन दाम्केत बह
कामिनी बातवानी सन गमकेत बह
कन-मून पायन पहिबि छाम्केत बह

16

अहाँक केशसँ नहलेत पानिक रूँनी
अहाँक गानसँ नसलेत पानिक रूँनी
अहाँक ठोबसँ छगलेत पानिक रूँनी
हमरो देहसँ छगलेत पानिक रूँनी

17

शोबनक छुता सारि पानि ठ वि देरौ



मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

एकहि चष्टमे धवती पव पावि देरौ
ले खचवाहा खचले सभ घोसवि देरौ
मैथिलीक अण्णमाण कवरि रिमावि देरौ

18

जँ देण्ण२ चनरौ संग त२ तवि देरौ
लेत२ कनमक मावि, गत्र ससावि देरौ
मिथिलाक रिबोधी, मावि खेहावि देरौ
बचनाहा अण्णच पव पावि ठा वि देरौ

19

महगीक आगिमे जवले जगतक रूँआ
दिन-बाति एक तीमल पीरैडी मोव पँरूआ
सबकावले रिबोधमे नगरैत डन जे नावा
खसन डै सडक पव से लोक नरूँआ-नरूँआ

20

डुक भविक२ आग पीरैय दिख हमवा
पोख भविक२ जिनगी जरीय दिख हमवा
थौँटाह रातसँ नागन थौँट, हाँठन,
थुदवी डेन जिनगी सीरैय दिख हमवा

21

सीता चकषु बुधुव मणक मणकेत बहय
रावी अगाटी हुन सदति मणकेत बहय
जगकक खेतक माँष्टि माँथ सजलैत बहय
मैथिल-मिथिला कीर्ति जगत पसरैत बहय



22

मिया मिया मण घब-घबमे जगमेत बहय
शकव रमिक२ पुत अंगणामे खेलेत बहय
उंगणा मण केव टाकव रौहि पुवेत बहय
हरियव खेत-पखाव सदति रिसुमेत बहय

23

कन-कन कमना कोशी निर्गन रैहेत बहय
डन-डन गंगक मिथुन जन डनकेत बहय
रौगमती गडक धवती जी जूडरौत बहय
माड मखानक डाना मित मजुरौत बहय

24

उरुवर पवती हरिया गेले जेना
दियादी मगड । हरिया गेले जेना
मागन तीड छिविया गेले जेना
मोषक रौत मरिया गेले जेना

25

अषका कसिते देखे त्ताक२ लोक हैसै
अपपण रिगतिक रौना देखु केना कलै
अषकव काह कोदावि हनुक मलौडे जकवा
अगणा हाथमे रैष्ट धरिते से लोक हबै

26

नाउठे गवीर, माले तकल कलै
हैशेले दूव धरिका, नउठे नटे
देखु नउठा, नउठेके देखि हैसै
एकदोसबके देखे मतोय धरै



27

देखलौँ मँस अँगना ओगलैत सपना
देखलौँ टोरैष्टिया पव लोठैत सपना
देखलौँ लष्ट ककरो मोनलैत सपना
ककरो सुठक दोरैव तौनलैत सपना

28

नीन लेश रिट साजन काजव कविया
कग नलैँ अशमन धरन गजोविया
निश्चय अहाँ जलैत छी ठैना-ठांगव
भेन रैतार छै तैँ गामक नरतुविया

29

कखला रँनि रिपक्षी टिकोव करै छै
सता हाथ नगितहि हूँफकाव भरै छै
लता रोष्टक लेन कतरा कग धरै छै
कतहुँ अशमन कतहुँ गयताव करै छै

30

दबकन कलेजा केना मिरै हम कछ
३ लोव आँखिक केना पीरै हम कछ
पियामनि हम छी पिया रँसधि रिदेशेमे
खेव साँण मस केना ज़ीरै हम कछ ?

31

(एकठा रँडदक झूँह सँ...)

झँ हाँकरँ टूटकारि त२क२ देरँ तेखाव



हाँकरँ जँ बेरौडा त२ हत चामो गहाड

जँ रूमरँ समाग तखल रौहि हमा पुरँ

जँ कवरँ अडपेना त२ थायरँ नथाव

32

जीरँ कतेक दिन एना टुप्पी मारि केव

तकरँ कहिया दरौग एहि रिगारि केव

चनरँ कतेक दिन घुसफुनिया मारि केव

बहरँ कतेक दिन पेठफुनिया मारि केव

33

पारसक रूँद पारि धक्की हथु भेन छै

कामागन जविते तकनी अहथु भेन छै

देह रस्र जेगठियन घामे सिङ्ग भेन छै

पिया अकमे गडजे मन्थ्रा हथु भेन छै

कता

1

मम रीगामँ उठि बहन छैक कक्का बाग

माँ छिथिनाक किएक क२ बहलै रिनाग

समन किएक शोपितसँ मैथिन भू-भाग

सुन२मे नहि किए अरैछ कोकिन-अनाग ?



टंदन कुमार झा, पिता-श्री अरुण झा, माता-श्रीमती मीना देवी, जन्म-०३-०२-१९८३,
ग्राम-सड़वा, मदलहनुवस्थान, पोस्ट-मदना, थाना-बाँरुँवली, जिला-मधुबनी । जन्म-स्थान-मिसराव (मामा
गाममे) थाना- स. सुशील झा (बाज्जारी), आर्थिक शिक्षा-मामा गाममे (१०वाँ धरि), आगाँक शिक्षा-
अनुभव-स्नातक (राजिा) एरँ स्नातक (राजिा) टंदनारी सिथिना महारिाज्य दवतंगामँ । रितीय-प्रबंधमे
डिप्लोमा (रेजिगकव अमठीदुष्ट आरु मैलजमेष्ट, इयँग)मँ । बारमासिक जरीरन- एकठी रूवाइष्ट्रीय
कंपनीमे लेखा-रिभागमे कार्यवत । परिवार-मिन्न मध्यम वर्गीय प्रयक परिवार । सहि लेखन-२००० ई
मँ । कएक लेख करिता, लेख अरुदि दवतंगी वेडियो सृशिन एरँ रितीय पत्र-पत्रिका सतमँ प्रकाशित-
प्रसारित ।

बिदेह कुतल अक भाषापाक वचनलेखन-

अलिशिकोय-मैथिली- / मैथिलीकोय-अलिश- प्राजेक्टकेँ आगु रूढ इँ, अणन सुमार आ योगदान अ-
मेन द्वारा ggajendra@videha.com पव पठाँइ ।

**१.भावत आ लपावक मैथिली भाषा-रैतानिक लोकनि द्वारा रँगाउन मनक गीत आ २.मैथिलीमे भाषा
सम्पादन पाठक्रम**

१.लपाव आ भावतक मैथिली भाषा-रैतानिक लोकनि द्वारा रँगाउन मनक गीत

१.१. लपावक मैथिली भाषा रैतानिक लोकनि द्वारा रँगाउन मनक उँटाका आ लेखन गीत

(भाषाशास्त्री डा. वामारताव यादवक धाकाकेँ पूर्ण कपसँ सभ न२ निर्धारित)

मैथिलीमे उँटाका तथा लेखन

१. पद्यमाखन आ अखण्डक: पद्यमाखनवास्तुगत ७, ए१, ए२, ए३ एरँ म अरुँत अछि । संकृत भाषाक अखण्डक
शेकक अन्तमे जाहि रसक अखन बँहत अछि ओही रसक पद्यमाखन अरुँत अछि । जेना-

अरुँ (क रसक बहुरीक कावणे अन्तमे ७ आँन अछि ।)



पञ्च (च) रश्मिक बहुरीक कावशे अन्तुमे ए३ आएन अछि ।)

खण्ड (छ) रश्मिक बहुरीक कावशे अन्तुमे ए५ आएन अछि ।)

सङ्घि (त) रश्मिक बहुरीक कावशे अन्तुमे ए७ आएन अछि ।)

खञ्ज (प) रश्मिक बहुरीक कावशे अन्तुमे ए९ आएन अछि ।)

उपहार्य रीत मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमाक्षक रीदनामे अधिकशि जगहपव अणुस्त्रावक प्रयोग देखन जागड । जेना- अक, पच, खड, सधि, खंड आदि । राकवणरिद पण्डित गोरिन्द माक कहरी छनि जे करसा, चरसा आ ठरसासँ पुरि अणुस्त्राव निखन जाए तथा तरसा आ परसासँ पुरि पञ्चमाक्षके निखन जाए । जेना- अक, टटन, अडा, अन्तु तथा कण्ण । ह्ददा हिन्दीक गिकठ बहन आधुनिक लेखक एहि रीतकेँ नहि मालीत छथि । ओ लोकनि अन्तु आ कण्णक जगहपव सेहो अत आ कण्ण निथेत देखन जागत छथि ।

नरीन पछति किड सुरिधाजनक अरथु डैक । किएक ठँ एहिमे समल आ स्त्राणक रीचत होगत डैक । ह्ददा कतोक रैव हन्तुलेखन रा ह्ददनामे अणुस्त्रावक जोठ सण रीन्दु स्पष्ट नहि भेनासँ अर्थक अर्थ होगत सेहो देखन जागत अछि । अणुस्त्रावक प्रयोगमे उँटाका-दोयक सम्वारणा सेहो ततरै देखन जागत अछि । एतदर्थ कसँ न२ क२ परसा धरि पञ्चमाक्षकेक प्रयोग कवरि उँटित अछि । यसँ न२ क२ त्र धरिक अक्षक सङ्ग अणुस्त्रावक प्रयोग कवरिमे कतहु कोना रिराद नहि देखन जागड ।

२.४ अ/ त : ठक उँटाका “व ह”जकाँ होगत अछि । अतः जत२ “व ह”क उँटाका हो ओत२ मात्र त निखन जाए । आन ठाम खाली त निखन जएरीक चाली । जेना-

त = टाकी, टेकी, त्रीठ, टेउँआ, तङ्ग, टेरी, टाकनि, टाठ आदि ।

ठ = पढाँग, रँठर, गठर, मठर, रँठरी, साँठ, गाठ, वीठ, चाँठ, सीठी, पीठी आदि ।

उपहार्य शिद, सभकेँ देखनासँ अ स्पष्ट होगत अछि जे साधारणतया शिदक शुकमे त आ मद्य तथा अन्तुमे त अरैत अछि । गएह निगम ड आ डक सम्पुर्त सेहो नागु होगत अछि ।

२.५ अ/ रँ : मैथिलीमे “र”क उँटाका रँ कएन जागत अछि, ह्ददा ओकरा रँ कएमे नहि निखन जएरीक चाली । जेना- उँटाका : रैण्णाथ, रिण्णा, नर, देरता, रिण्णु, रँशि, रँदना आदि । एहि सभक स्त्राणपव फ्रमशि: रैण्णाथ, रिण्णा, नर, देरता, रिण्णु, रँशि, रँदना निखरीक चाली । सामान्यतया र उँटाकाक लेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन, ओजह आदि ।

४.५ अ/ ज : कतहु-कतहु “ज”क उँटाका “ज”जकाँ करैत देखन जागत अछि, ह्ददा ओकरा ज नहि निखरीक चाली । उँटाकामे यड, जदि, जहणा, जुग, जारत, जोगी, जदु, जम आदि कहन जएरीना शिद, सभकेँ फ्रमशि: यड, यदि, यहणा, यग, यारत, योगी, यदु, यम निखरीक चाली ।

३.६ अ/ य : मैथिलीक रतिनीमे ए आ य दनु निखन जागत अछि ।



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका विदेह १४३ म अंक ०१ दिसम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७२ अंक १४३)

मानुसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

प्राचीन रतिनी- कएन, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।

नरीन रतिनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शिष्टक शुकमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एणा, एकव, एहन आदि । एहि शिष्ट, सभक स्त्रानपव यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कवरौक चाली । यद्यपि मैथिलीभाषी थाक सहित किछु जातिमे शिष्टक आवस्थामे “ए”केँ य कहि उँचाव कएन जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीन पञ्चतक अनुभव कवरै उँपहाउ मानि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दूनुक लेखनमे कोना सहजता आ दूकहतक रीत नहि अछि । आ मैथिलीक सरिसाधारक उँचाव-शैली यक अपेक्षा एसँ रैसी निकट छैक । थाम क२ कएन, हएँ आदि कतिपय शिष्टकेँ केन, हँ आदि कपमे कतहू-कतहू निखन जाएँ सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रैसी समीचीन प्रमाणीत करैत अछि ।

३. हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पञ्चवामे कोना रीतपव रँन दैत कान शिष्टक पाछाँ हि, हू नगाउन जागत छैक । जेना- हुनकहि, अणनहू, ओकवहू, तकौनहि, टोष्टहि, आणहू आदि । ऋदा आधुनिक लेखनमे हिक स्त्रानपव एकाव एरँ हूक स्त्रानपव ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हुनके, अणना, तकौने, टोष्ट, आणा आदि ।

१. य तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकशितः यक उँचाव थ होगत अछि । जेना- यडव (थडव), योडनी (थोडनी), यहँकोण (थँकोण), रूयैनी (रूथैनी), सन्नाय (सन्नाथ) आदि ।

+ ध्रुमि-लोग : निम्नलिखित अवस्थामे शिष्टक ध्रुमि-लोग भ२ जागत अछि:

(क) फिनाय्या प्रत्य अयमे य रा ए वृत्त भ२ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिले अक उँचाव दीर्घ भ२ जागत अछि । ओकव आगाँ लोग-सूचक छिे रा रिकारी (१ / २) नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) जेन, उँठए (उँठय) पडतोक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क जेन, उँठ पडतोक ।

पठ२ गेनाह, क२ जेन, उँठ२ पडतोक ।

(ख) पूर्वाकारिक प्रत्य आय (आए) प्रत्यमे य (ए) वृत्त भ२ जागछ, ऋदा लोग-सूचक रिकारी नहि नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) गेन, पठाय (ए) देरँ, नहाए (य) अएनाह ।

अपूर्ण कप : था गेन, पठा देरँ, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्य ओक उँचाव फिनापद, सँका, ओ विशेष तीनुमे वृत्त भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : दोसरि मारिनि छलि गेलि ।



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका विदेह १४३ म अंक ०१ दिसम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७२ अंक १४३)

मानकीपिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अपूर्ण कप : दोसब मागिष चलि गेल ।

(घ) रतिमास हनुमत्क अश्रिम त वृषु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : गठेत अछि, रजेत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण कप : गठे अछि, रजे अछि, गरै अछि ।

(७) फ्रियापदक अरसाण गक, उक, एँक तथा लीकमे वृषु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप: छियोक, छियेक, छलीक, छोक, छैक, अरिठेक, होगक ।

अपूर्ण कप : छियो, छिये, छली, छो, छै, अरिठे, होग ।

(८) फ्रियापदीय प्रत्यय ह, ह् तथा हकावक जोप भ२ जागछ । जेना-

पूर्ण कप : छहि, कहनि, कहनहुँ, गेनह, नहि ।

अपूर्ण कप : छनि, कहनि, कहनौँ, गेनह, नग, नगि, ले ।

९. ध्रुमि श्वाभुवा : कोला-कोला श्रव-ध्रुमि अणवा जगहसँ हष्टि क२ दोसब ठाम चलि जागत अछि । खस क२ द्रव्य ग आ उँक सञ्चमे ग रात नागु होगत अछि । मैथिलीकषा भ२ गेन शिष्टक मया रा अश्रुमे जँ द्रव्य ग रा उँ आरैँ तँ ओकव ध्रुमि श्वाभुवित भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- शिनि (शिङ्ग), पाणि (पाङ्ग), दानि (दाङ्ग), माष्टि (माङ्ग), काछ (काङ्ग), मासु (माङ्ग) आदि । द्रुदा तसेम शिष्ट, सभमे ग निश्रम नागु नहि होगत अछि । जेना- बगिळै बगम आ सुधागिळै सुधाङ्ग नहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हनुमत् ()क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनुमत् ()क आरथकता नहि होगत अछि । कावण जे शिष्टक अश्रुमे अ उँचावण नहि होगत अछि । द्रुदा संस्कृत भाषासँ जहिनक तहिना मैथिलीमे आएन (तसेम) शिष्ट, सभमे हनुमत् प्रयोग कएन जागत अछि । एहि शोथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शिष्टकै मैथिली भाषा सञ्चमे निश्रम अश्रुमाव हनुमत्-रिहीन बाखन गेन अछि । द्रुदा बाकवण सञ्चमे प्रयोजनक लेन अश्रुमावक श्वाभुव कतहुँ-कतहुँ हनुमत् देन गेन अछि । प्रस्तुत शोथीमे मैथिली लेखक प्राप्ति आ नरीष द्रुनु शिष्टक सवन आ समाप्ति पक्ष सभकै समष्टि क२ रर्षि-रिचाम कएन गेन अछि । श्वा आ समयमे रँटक सञ्चमे हनुमत्-लेखन तथा तर्कनीकी दृष्टिसँ सेहो सवन होरँरना हिसारँ रर्षि-रिचाम गिनाओन गेन अछि । रतिमास समयमे मैथिली माह-भाषी पर्सिभुकेँ आन भाषाक माधुमसँ मैथिलीक उँग जेरँ पडि बहन परिश्रममे लेखनमे सहजता तथा एककतापव धाव देन गेन अछि । तखन मैथिली भाषाक मुन रिशेयता सभ कर्षित नहि होगक, ताहुँ दिस लेखक-मन्डन सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादरक कहँ छनि जे सवनताक अश्रुमावमे एहन अश्रु किमहुँ ले आरँ देरँक चली जे भाषाक रिशेयता छँहमे पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादरक धाकाकेँ पूर्ण कर्षसँ सञ्च न२ निर्धारित)

१.२. मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-गेन



१. जे शिष्ट, मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि रत्ननीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रत्ननीमे निखन जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह

एखन

ठाग

जकब, तकब

तनिकब

अछि

अग्राह

अखन, अखनि, एखन, अखनी

ठिमा, ठिना, ठिगा

जेकब, तेकब

तिनकब। (रैकपिक कर्षे ग्राह)

अँड, अहि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कर्षे रैकपिकतया अणुनाउने जाय: भ२ गेन, भ३ गेन रा भ४ गेन। जा बहन अछि, जाय बहन अछि, जअ बहन अछि। कब गेनाह, रा कबय गेनाह रा कबए गेनाह।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'ष' निखन जाय सकैत अछि यथा कहनि रा कहनिह।

४. 'अ' तथा 'अँ' ततय निखन जाय जत स्पृष्टतः 'अग' तथा 'अँ' सदृश उच्चारण गच्छे हो। यथा- देखेत, डलोक, रौआ, डोक गवादि।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शिष्ट, एहि कर्षे प्रयुक्त होयत: जेह, सैह, गएह, ओह, लेह तथा देह।

६. ह्रस्व अकारांत शिष्टमे 'ग' के अणु कवरि सामान्यतः अग्राह थिक। यथा- ग्राह देखि आरिह, मानिनि गेलि (मन्त्रय मात्रमे)।

७. स्तत्रे जस 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे तँ यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकपिक कर्षे 'ए' रा 'य' निखन जाय। यथा:- कयन रा कएन, अयनाह रा अएनाह, जाय रा जअ गवादि।

८. उच्चारणमे दु स्वरक रीट जे 'य' ध्वनि स्तत्रः आरि जागत अछि तकरा लेखमे स्थान रैकपिक कर्षे देन जाय। यथा- धीआ, अँटेआ, रिआह, रा धीया, अँटेया, रिगाह।

९. सांख्यिक स्तत्रे स्वरक स्थान यथार्थतः 'अ' निखन जाय रा सांख्यिक स्वर। यथा:- मैअग, कनिअग, किवतनिअग रा मैअँ, कनिअँ, किवतनिअँ।

१०. कावकक रिभक्तिक निम्नलिखित कर्षे ग्राह:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। मे मे अणुस्वर सरिथा लज्ज थिक। 'क' क रैकपिक कर्षे 'केव' बाखन जा सकैत अछि।



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका विदेह १४३ म अंक ०१ दिसम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७२ अंक १४३)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

११. पुरिकानिक फियागदक रौद 'कय' रा 'कए' अराय त्रिकल्पिक कर्षे नगाउन जा सकेत अछि । यथा:-
देथि कय रा देथि कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गवादि लिखन जाय ।

१३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क रँदना अस्माव नहि लिखन जाय, कित्तु डापाक सुरिधार्थ अर्द्ध 'उ', 'ए', तथा 'ण' क रँदना अस्मारावो लिखन जा सकेत अछि । यथा:- अर्द्ध, रा अर्क, अखन रा अचन, कर्ष रा कर्ष ।

१४. हर्नात छिन निश्चयतः नगाउन जाय, कित्तु रिभञ्जिक संग अकारात प्रयोग कएन जाय । यथा:-
श्रीमान्, कित्तु श्रीमानक ।

१५. सत एकन कावक छिन शिष्टमे सँ क लिखन जाय, हँ क नहि, सँशु रिभञ्जिक हेतु ह्वाक लिखन जाय, यथा हव पवक ।

१६. अस्मामिककेँ चन्द्ररिन्दु द्वारा राउ कएन जाय । पर्वतु ऋद्राक सुरिधार्थ हि स्याण जष्टन मात्रागव अस्मारावक प्रयोग चन्द्ररिन्दुक रँदना कएन जा सकेत अछि । यथा- हि केव रँदना है ।

१७. पूर्ण रिवाग पामीसँ (।) सृष्टि कएन जाय ।

१८. समस्त पद सँ क लिखन जाय, रा हागफेणसँ जोडि क , हँ क नहि ।

१९. लिख तथा दिख शिष्टमे रिकारी (२) नहि नगाउन जाय ।

२०. अक देरणागवी कएमे बाखन जाय ।

२१. कित्तु धुनिक लव नरीन चिह्न रँवराउव जाय । जा अ नहि रँवव अछि तँरत एहि दू धुनिक रँदव पुरिबत् अया/ आया/ अया/ आया/ आउ/ अउ लिखन जाय । आकि ए रा ओ सँ रउ कएन जाय ।

ह.१- लारिन्दु माँ ११/११३ श्रीकांतु अरुव ११/११३ सुरेन्द्र माँ सुम ११/०१/१३

२. मैथिलीमे भाषा संपादन पाठकेम

२.१. उँचाका निर्देशः (रौल कए कए ज्ञाह):-

दुनु न क उँचाकामे दाँतमे जीह सँठत- जेना रौजू नाम , ऋदा ण क उँचाकामे जीह मुर्धामे सँठत (है सँठैए तँ उँचाका दाय अछि)- जेना रौजू गणेशि । तानरा शिमे जीह तारुसँ , शमे मुर्धसँ आ दुनु समे दाँतसँ सँठत । शिर्गो, सत आ शोका रौजि क२ देखु । मैथिलीमे श केँ रैदिक संस्कृत जकाँ थ सेलो उँचवित कएन जागत अछि, जेना रयाँ, दाय । य अलको स्थानगव ज जकाँ उँचवित होगत अछि आ ण ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेशि संज्ञोग आ

गडसे उँचवित होगत अछि) । मैथिलीमे र क उँचाका रँ ने क उँचाका स आ य क उँचाका ज सेलो होगत अछि ।

ओहना ज्ञान ग रँशीकान मैथिलीमे पहिल रौजन जागत अछि काका देरणागवीमे आ शिथिनाश्रवमे ज्ञान ग अश्रवक पहिल लिखनो जागत आ रौजलो जएरौक टाली । काका जे हिन्दीमे एकव दायपूर्ण उँचाका



मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

होगत अछि (निखत तँ पहिल जागत अछि द्वाद रौजम रौदमे जागत अछि), से शिक्षा पछतिक दायक काका हम सब ओकर उचावण दायणी ठगसँ क२ बहन छी ।

अछि- अ ग ड अँड (उँचावण)

छथि- छ ग थ छैथ (उँचावण)

गहँटि- ग हँ ग ट (उँचावण)

आरँ अ आ ग ज ए अँ ओ उ अँ अः म अँ सत लेन गावा सेहो अछि, द्वाद अँमे ज अँ ओ उ अँ अः म केँ सहायक कगमे गत कगमे प्रयाज आ उँचवित कथन जागत अछि । जेना म केँ वी कगमे उँचवित कवरँ । आ देखियौ- अँ लेन देखिओ क प्रयोग अगुटित । द्वाद देखिअँ लेन देखियौ अगुटित । क सँ ह धवि अ समितित बेनासँ क सँ ह रँलेत अछि, द्वाद उँचावण कान हनप्रु हाउ शेटक अस्तुक उँचावणक प्रवृत्ति रँठन अछि, द्वाद हम जखन मलाजमे ज अँमे रँजेत छी, तखना प्रकाका लोककेँ रँजेत सनरँहि- मलाज२, रातुरमे ओ अ हाउ ज = ज रँजे छथि ।

हव त्र अछि जू आ ए३ क सहाज द्वाद गत उँचावण होगत अछि- गा । ओहिना छ अछि कू आ य क सहाज द्वाद उँचावण होगत अछि छ । हव मै आ व क सहाज अछि त्रै (जेना त्रैशिक) आ स आ व क सहाज अछि स (जेना मिस) । त्र भेन त+व ।

उँचावणक आँडियो हागन विदेह आँकगल <http://www.videha.co.in/> गव उँगनट्र अछि । हव केँ / सँ / गव पूरँ अँकवसँ सँ क२ निखु द्वाद तँ / क२ लँ क२ । अँमे सँ मे पहिल सँ क२ निखु आ रौदरँना लँ क२ । अँकक रौद ठी निखु सँ क२ द्वाद अँग ठी निखु लँ क२ जेना

छसँ द्वाद सत ठी । हव उँय म सतम निखु- छँय सतम लँ । घवरँवमे रँवा द्वाद घवरँवमे रावँ प्रयाज क२ ।

बहए-

बहँ द्वाद सकेँ (उँचावण सकेँ-ए) ।

द्वाद कथना कान बहए आ बहँ मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कना जगहमे पाँकिंग कवरँक अँगस बहँ ओकरा । प्रुढनागव गता नागन जे तुनतुन नामा अँ ड्रागलव कगएँ हसक पाँकिंगमे काज कवैत बहए ।

डलँ, डनए मे सेहो अँ तवहक भेन । डनए क उँचावण डन-ए सेहो ।

सँयोगल- (उँचावण सँजोगल)

केँ/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गगमे लँ क२, गगमे क२ सकेँ छी ।)

क (जेना बागक)

बागक आँ सँग (उँचावण बाग के / बाग क२ सेहो)

सँ- स२ (उँचावण)



छन्दरिन्दु आ अस्त्राव- अस्त्रावमे कठ धरि प्रयोग होगत अछि रुद्रा छन्दरिन्दुमे ले । छन्दरिन्दुमे कलक एकावक सेहो उँचावण होगत अछि- जेना बागसँ- (उँचावण बाग स२) बागकेँ- (उँचावण बाग क२/ बाग के सेहो) ।

केँ जेना बागकेँ भेन हिन्दीक को (बाग को)- बाग को= बागकेँ

क जेना बागक भेन हिन्दीक का (बाग का) बाग का= बागक

क२ जेना जा क२ भेन हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेन हिन्दीक से (बाग से) बाग से= बागसँ

स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) एते टाक भेद, सरलक प्रयोग अरुद्धित ।

के दोसव अर्थे प्रशङ्क भ२ सकेए- जेना, के कहनक ? रिभक्ति “क”क रँदना एकव प्रयोग अरुद्धित ।

नधि, नहि, ले, नग, नँग, नगँ, नगँ ए सभक उँचावण आ लेखन - ले

ओरु क रँदनामे रु जेना महर्गुर्ण (महओरुगुर्ण ले) जतए अर्थ रँदनि जतए ओतहि मात्र तीन अक्षरक स्रग्गुणक प्रयोग उँचित । सम्पति- उँचावण स स ग त (सम्पति ले- काका सली उँचावण आसानीसँ सञ्चर ले) । रुद्रा सरुतिम (सरुतिम ले) ।

वाह्रिय (वाह्रिय ले)

सकेए/ सके (अर्थ परिवर्तन)

पोडेमे/ पोडे लेन/ पोछ मेव

पोडेए/ पोछए/ (अर्थ परिवर्तन) पोछए/ पोडे

ओ लोकनि (हठी क२, ओ ये रिंकावी ले)

ओअ/ ओहि

ओहिमे/

ओहि मेव/ ओही व२

जगरीं/ बैसरीं

गँचग्याँ

देधियोक/ (देधिओक ले- तहिना अ ये द्वात्र आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अरुद्धित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तैँ



हेत / हत

बहि/ बहि/ बँग/ बगँ/ ले

सौसे/ सौसे

रैच /

रैची (सोबाउव)

गाए (गांग बहि), दूदा गांगक दूध (गांगक दूध ले ।)

बहलौ/ गहिलौ

हमही/ अही

सर - सभ

सररुक - सभरुक

धवि - तक

गग- रौत

बूमर - समयर

बूमरौ/ समयरौ/ बूमरहू - समयरहू

हमरा अाव - हम सभ

आकि- आ कि

सकेछ/ कबेछ (गद्यमे प्रयोगक आरंभकता ले)

होगल/ होगि

जांगल (जानि ले, जेना देव जांगल) दूदा जानि-रूमि (अर्थ परिवर्तन)

गगँ/ जागँ

आड/ जाड/ आडु/ जाडु

मे, केँ, सँ, गव (गिहँसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (गिहँसँ सँ क२) दूदा दूरी रा लेसी रिभक्ति संग
बहनागव गहिल रिभक्ति ठाकेँ सँडु । जेना एमे सँ ।

एकठा , दूठा (दूदा कए ठा)

रिकावीक प्रयोग गिहँसँ अन्तमे, रीचमे अन्तमे कएने ले । आकावातु आ अन्तमे अ क रौद रिकावीक
प्रयोग ले (जेना दिथ

, आ/ दिथ , आ, आ ले)



अपेन्द्रोपनीक प्रयोग रिंकारीक रँदनामे कवरँ अशुचित आ मात्र हर्षक तकनीकी नूनताक पविटाक)-
उना रिंकारीक रँकृत कप २ अरग्रह कलन जागत अछि आ रतनी आ उँटाका दुनु ठाय एकव जाग बहेत
अछि। बहि सकेत अछि (उँटावनामे जाग बहिते अछि) । रूदा अपेन्द्रोपनी सेहो अंग्रेजीमे गनेमिर
कसमे होगत अछि आ ह्रेँटमे शैदमे जतए एकव प्रयोग होगत अछि जेना *raison d'etre*
एतए सेहो एकव उँटावना बेजेन डेठव होगत अछि, माल अपेन्द्रोपनी अरकामे ले दैत अछि रवण
जोडेते अछि, से एकव प्रयोग रिंकारीक रँदना देनाग तकनीकी कर्णे सेहो अशुचित) ।

अगमे, एहिमे/ **अमे**

जगमे, जाहिमे

एथन/ **अथन** अगथन

कँ (के नहि) मे (अशुभाव बहित)

त२

मे

द२

तँ (त२, त ले)

सँ (स२ स ले)

गाँ तव

गाँ वग

साँ खन

जो (जो go, करे जो do)

ते/तअ जेना- ते दुखारे/ तगयो/ तगले

जे/जअ जेना- जे कावण/ जगसँ/ जगले

अ/अअ जेना- अ कावण/ असँ/ अगले/ रूदा एकव एकठाँ खान प्रयोग- नावति कतेक दिसँ कहेत
बहेत अग

ले/वअ जेना लेसँ/ नगले/ ले दुखारे

नहँ/ लो

गेलो/ ललो/ लवँ/ गेनहँ/ लेनहँ/ लेन

जअ/ जाहि/ जे



मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

झरिगा/ झरिगा/ झरगा/ झरगा

एहि/ अहि

अग (बालक अतमे ब्राह्म) / अ

अगछ/ अछि अछ

तग/ तहि ते/ तहि

ओहि/ ओग

सोथि/ सोथ

जोरि/ जोरी/ जोर

भलेही/ भवहि

ते/ तंग/ तंग

जापरि/ जापरि

नग/ ने

छग/ छे

नहि/ ने/ नग

गग/ गो

ठगि/ ठगि ...

समय गेरुदक संग जखन कोना रिभक्ति जूठै छै तखन समे जना समेगव गत्यादि । असगवमे छन्द
आ रिभक्ति जूठल छन्दे जना छन्देसँ, छन्देमे गत्यादि ।

अग/ अहि

जे

झरिगा/ झरिगा/ झरगा/ झरगा

एहि/ अहि/ अग/ अ

अगछ/ अछि अछ

तग/ तहि ते/ तहि

ओहि/ ओग

सोथि/ सोथ



जीरि/ जीरी/

जीरं

भने/ भनेही/

भवहि

ठे/ ठंग/ ठंग

झावरं/ जघरं

नग/ ने

डग/ डे

नहि/ ले/ नग

गग/

गे

डगि डगि

चुकन अडि/ गेन गडि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पदन पाठक्रम

नीटाक सूटीमे देन रिक्पमेस लैंग्ज एडीटव द्वावा कोष कप चुनन जेरीक चाली:

रौलेड कएन कप ग्राह:

१. होयरीना/ होरीयरीना/ होयरीना/ हेरीरीना, हेयरीना/ होयरीक/होरीयरीना /होयरीक

२. आ/आ२

आ

३. क' जेन/क२ जेन/क३ जेन/क४ जेन/न/न२/न३/न४

४. भ' गेन/भ२ गेन/भ३ गेन/भ४

गेन

५. कव' गेनाह/कव२

गेनाह/कव३ गेनाह/कव४ गेनाह

६.

मिथ/दिथ मिथ,दिथ,मिथ,दिथ/



१. कब' रँना/कब२ रँना/ कबय रँना कबेरँना/क'ब' रँना /

कबेरँना

१. रँना रना (शुकय), रानी (सूनी) ९

.

थाङ्ग थांग्र

१०. थायः थायल

११. दुःख दुथ १

२. टनि गेन चव लाव/टेन गेन

१३. देवविह देनकिह, देवविन

१४.

देखविह देखविनि/ देखवेह

१३. डविह/ डनहि डविनि/ डलेन/ डवनि

१७. चवेत/देत चवति/देति

११. एथला

एथला

१४.

रँठनि रँठण रँठहि

१९. ७/७२(सरँगम) ७

२०

. ७ (संयोजक) ७/७२

२१. फाणि/फाणि फाणि/फाणि

२२.

जे जे/जे२ २३ ना-बुक्क ना-बुक्क

२४. केवहि/केवनि/कवनिहि

२३. तखनत/ तखन त

२७. जा



बहव/जाय बहव/जाय बहव

२१. निकवय/निकवय

वागव/ वगव रैहवाय/ रैहवाय वागव/ वगव निकव/रैहवाे वागव

२४. उतय/ जतय जत/ उत/ जतय/ उतय

२६.

की खुवव जे कि खुवव जे

३०. जे जे/जे२

३१. कुदि / यदि(मोष पावर) कुगद/यागद/कुद/याद/

यदि (मोष)

३२. ओलो/ ओलो

३३.

हंसय/ हंसय हंस२

३४. लो आकि दम/लो किरा दम/ लो रा दम

३५. सान्-सन्व सान-सन्व

३६. डह/ सात ड/डः/सात

३७.

की की/ की२ (दीयीकावप्रुमे २ रजित)

३८. जराँ जराँ

३९. कवयताह/ कवयताह कवयताह

४०. दमाण दिशि दमाण दिशि/दमाण दिय

४१.

. लावह गवह/गवह

४२. किड आव/ किड आव/ किड आव

४३. जाग डव/ जागत डव जाति डव/जेत डव

४४. गहूँटा/ जेँ जागत डव जेँ जाग डव गहूँटा/ जेँ जागत डव

४५.



ऊरौन (सुरा)/ ऊरुन(लुओऊ)

ॡॡ. वय/ वय क/ क२/ वय क२ / व२ क२/ व२ क२

ॡ१. व/व२ कय/

कॡ

ॡॢ. एथन / एथल / अथन / अथल

ॡॣ.

अलीकेँ अलीकेँ

ॡ।. गलीव गलीव

ॡ॥.

धाव गाँव केनाअ धाव गाँव केनाय/केनाए

ॡ०. जेकाँ जेकाँ

ऊकाँ

ॡ१. तहिन तहिन

ॡॡ. एकव अकव

ॡॢ. रँहिनऊँ रँहिनोअ

ॡॣ. रँहिन रँहिन

ॡ।. रँहिन-रँहिनोअ

रँहिन-रँहिनऊँ

ॡ॥. नहि/ ले

ॡ०. कवरौ / कवरौय/ कवरौअ

ॡ१. ठँ/ त २ तय/तअ

ॡॡ. जेयावी ये जेठ-जाए/जे, जेठ-जाय/जाअ

ॡॢ. पितीमे दु भाग/जाए/जाँअ

ॡॣ. अ पोथी दु भागका भाँअ/ जाए/ जेन। यारत ऊरत

ॡ।. माय ये / माँअ दूदाँ माँअक मयत

ॡ॥. देहि/ दअन दनि/ दएहि/ दयहि दहि/ दैहि



७७. द/ द२/ द३

७१. उ (संयोजक) उ२ (संरचना)

७४. तका कय तकाय तकथ

७६. पौले (on foot) पथले कथक/ कैक

१०.

ताहुये ताहुये

११.

पुनिक

१२.

रंजा कय कथ / क२

१३. रंजाय/रंजाथ

१४. रंजा

१५.

दिका दिका

१६.

ततथि

११. गवरौवहि/ गवरौवनि/

गवरौवहि/ गवरौवनि

१४. रौव रौव

१६.

तेह तेह(थक)

४०. जे जे'

४१

४. से/ से/से'

४२. थकथक थकथक

४३. भुमिह भुमिह



+४. सुगव

/ सुगवका सुगव

+३. सठलक सठलक +३.

डुबि

+१. कवगयो/उ कलेयो ल देवक /कवियो-कवगयो

+१. प्रबोधि

प्रबोध

+२. सगड १-सठि

सगड १-सठि

२०. पखे-पखे पौले-पौले

२१. खेवखेक

२२. खेवखेक

२३. वगा

२४. लोख- लो लोख

२५. बूमव बूमव

२६.

बूमव (संबोधन अर्थमे)

२७. योह यथ / गथल/ सेह/ सथल

२८. तातिव

२९. अथलाय- अथलाग/ अथलाग/ अथलाग

३०. निह- निह

३०.

बिबु बिबु

३०२. जग जग

३०३.

जाग (in different sense)-last word of sentence

३०४. डत गव थोदि जाग



१०३.

ल

१०३. खेवाए (pl ay) खेवाँ

१०१. शिकायत- शिकायत

१०४.

ठग- ठग

१०६

. गठ- गठ

११०. कनिए/ कनिये कनिये

१११. वाकस- वाकसे

११२. लोए/ लोय लोए

११३. खडबदा-

उबदा

११४. बुँसेवहि (di f f er ent meani ng- got under st and)

११५. बुँसएवहि/बुँसेवहि/ बुँसयवहि (under st ood hi ms el f)

११६. चलि- चव/ चवि लाव

११७. खधाए- खधाय

११४.

मोष गौचवबिह/ मोष गौचवबिह/ मोष गौचवबिह

११६. कैक- कएक- कएक

१२०.

वग वग

१२१. जवनाए

१२२. जवनाए जवनाए- जवनाए/

जवनाए

१२३. लोएत



१२४.

गबरेवहि/ गबरेवनि गबरेवहि/ गबरेवनि

१२५.

टिखेत- (to test) टिखेत

१२६. कबखेयो (willing to do) करेयो

१२७. जेकवा- जकवा

१२८. तकवा- तेकवा

१२९.

बिदेसब खलमे/ बिदेसबे खलमे

१३०. कबरैजलहुँ/ कबरैजलहुँ/ कबरैजलहुँ कबरैजलहुँ

१३१.

हाबिक (उचकष लखबक)

१३२. ओज्ज रज्ज अखसोच/ अखसोस कागत/ कागच/ कागज

१३३. आषे भाग/ आष-भाग

१३४. गिटा / गिटाग/ गिटाग

१३५. लएग/ ल

१३६. रैल लएग

(ले) गिटा जय

१३७. तकल ल (लएग) कहैत अछि। कहै/ सुलै देखै छव दूदा कहैत-कहैत/ सुलैत-सुलैत/ देखैत-देखैत

१३८.

कतेक लोटे/ कतक लोटे

१३९. कयाग-कयाग/ कयाग- कयाग

१४०

- वग वग

१४१. खेवाग (for playing)

१४२.



उबिह/ उबिह

१४३.

होअत होअ

१४४. का कियो / केउ

१४५.

कमे (hair)

१४६.

कस (court -case)

१४७

. रैलगाँ/ रैलगाँ/ रैलगाँ

१४८. जलगाँ

१४९. ककी कसी

१५०. चवटा चटा

१५१. कर्म कवम

१५२. डुराँरै/ डुराँरै/ डुराँरै/ डुराँरै/ डुराँरै

१५३. अखुनका/

अखुनका

१५४. कथ/ कथ (राकक अंतिम गेट्टे)- क

१५५. कथक/

कवक

१५६. गवगी गर्गी

१५७

. रवदी रदी

१५८. सुना लोवाले सुना/सुना२

१५९. एनाँ-लनाँ

१६०.

तेना ल येववहि/ तेना ल येववहि



मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१७१. नद्य / ले

१७२.

चरो चरो

१७३. कतहु/ कते कली

१७४. उमरिगव-उमरिगव उमरिगव

१७५. भविगव

१७६. भोज/भोजन भोजन

१७७. गग/गग

१७८.

के के

१७९. दरर/दरर

१८०. गाय

१८१.

धवि तक

१८२.

धुवि लोष्ट

१८३. बौबरक

१८४. रहु

१८५. रो/रु

१८६. रोहि(गद्यमे ग्राह)

१८७. रोली / रोहि

१८८.

कवरौअ कवरौअये

१८९. एकेटा

१९०. कवितथि / कवतथि

१९१.

गहुँटा/ गहुँट



२२३. कहि/ कही

२२४. तँअ

ते / तअ

२२५. नँअ/ नअ वप्रिअ/ वलि/ले

२२६. हे/ हअ / एवीहँ

२२७. छयिअ/ छै/ छैक /छअ

२२८. दृष्टिअ/ दृष्टियँ

२२९. अँ (come)/ अँअ (conjunction)

२३०.

अँ (conjunction)/ अँअ (come)

२३१. कला/ कोला, कोना/कना

२३२. गोलैह-गवहि-गवनि

२३३. होएरौक- होएरौक

२३४. केदौ- कएदौ- कएनहँ/केदौ

२३५. किड न किड- किड ल किड

२३६. केहेन- केहन

२३७. अँअ (come)-अँ (conjunction-and)/अँ। अँ-अँ /अँह-अँह

२३८. हएत-हेत

२३९. युमेनहँ-युमेनहँ- युमेवाँ

२४०. एवाँक- अएनाक

२४१. होनि- होअ/ होहि

२४२. उ-बाग उ अँअक रीट (conjunction), उ२ कहनक (he said)/उ

२४३. की हअ/ कोसी अएवी हअ/ की हे। की हअ

२४४. दृष्टिअ/ दृष्टियँ

२४५.

. गोमिअ/ सोमअ

२४६. ते / तँअ/ तयिअ/ तहँ



२४१. जौ

। जाँ जाँ

२४५. सभ/ सरै

२४६. सभक/ सरैलक

२४७. कहि/ कही

२४८. कला/ कोला/ कोलहँ/

२४९. कबकती भय गय/ भय गय/ भय गय

२५०. कोना/ केना/ कना/ कना

२५१. अः/ अह

२५२. जलै/ जलै

२५३. लोवनि/

लोवाह (अर्थ परिवर्तन)

२५४. केवहि/ कएवहि/ केवनि/

२५५. नय/ नय/ नय (अर्थ परिवर्तन)

२५६. कर्षक/ कलक/ कर्ष-मर्ष

२५७. गठवहि गठवनि/ गठवण/ गठवण/ गठवण/ गठवण/

२५८. निशय/ नियम

२५९. हेबईअव/ हेबईअव

२६०. गहिव अकव कल ठा रीचमे कल ठ

२६१. आकावास्तुमे रिकारीक प्रयोग उचित ले/ अपोस्ट्रुक्चरक प्रयोग हान्स्टक तकनीकी नुनताक परिचायक
ओकव रैदना अरग्रह (रिकारी) क प्रयोग उचित

२६२. केव (पद्यमे ब्राह्म) / -क/ क२/ के

२६३. डैहि- डहि

२६४. वलै/ वलै

२६५. होएत/ हएत

२६६. जाएत/ जएत/

२६७. आएत/ अएत/ आओत



२१९

. खंयत/ खंयत/ खेत

२१२. सिखएरीक/ निखरीक/ निखरीक

२१३. गुरु/ गुरु

२१४. गुरुहे/ गुरु

२१५. खंयत/ खंयत/ एत/ एत

२१६. जाहि/ जाग/ जग/ जे/

२१७. जागत/ जेत/ जगत

२१८. खंय/ खंय

२१९. केक/ कक

२२०. खंय/ खंय/ खंय

२२१. जा/ जग/ जग (नावति जा नगनीह ।)

२२२. गुरु/ गुरु

२२३. कुरु/ कुरु

२२४. ताहि/ ते/ तग

२२५. गायर/ गायर/ गायर

२२६. सके/ सक/ सक

२२७. सेवा/ सेवा/ सेवा (भात सेवा गोन)

२२८. कहत बली/देवेत बली/ कहत छरो/ कह छरो- खलिा चरो/ गटेत

(गटे-गटेत खंय कखला काव परिवर्तित) - खंय बुंसे/ बुंसेत (बुंसे/ बुंसे छी कदा बुंसेत-बुंसेत)/ सकेत/ सके । करेत/ करे । दे/ देत । डेक/ डे । रचरो/ रचरोक । बखर/ बखरक । बिग/ बिग । वातिक/ वातिक बुंसे आ बुंसेत केव खंय-खंय जगहन प्रयोग समीपेन खंय । बुंसेत-बुंसेत खंय बुंसेत । हयं बुंसे छी ।

२२९. दुख/ दुख

२३०. ते/ ते/ ते

२३१.

खं/ खं/ बुना (जेव खं/ जेव खं)

२३२. तक/ धवि



२९३. ग२/ लो (meaning different - जगदौ ग२)

२९४. स२/ सँ (हुदा द२, न२)

२९५. उ३/ उ३ (तीण अक्षरक सेन रँदना प्रणकञ्जिक एक थी एकठा दोसबक उँपयोग) आदिक रँदना ह्रु आदि । महउ३/ महउ३/ कर्ता/ कर्ता आदिसे उ सँशुक्त कोना आरुक्ता येथिनीसे ले अछि । रउ३

२९६. रँस३/ रँस३

२९७. रँना/ रँना रँना/ रना (बहेरँना)

२९८

२९९. रँना/ (रँदनेरँना)

३००. रा३/ रा३

३०१. अ३/ अ३

३०२. अ३/ अ३

३०३. अ३/ अ३

३०४. अ३/ अ३ (

अ३/ अ३)

३०५. अ३/ अ३

३०६. अ३/ अ३

३०७. अ३/ अ३

३०८. अ३ (come)/ अ३ (and)

३०९. अ३/ अ३

३१०. २ केव रारहाव शिद्धक अ३से मा३, यथासंभर रँ३से ले ।

३११. अ३/ अ३

३१२

अ३ (अ३)/ अ३ (अ३) (meaning different)

३१३. अ३/ अ३

३१४. अ३/ अ३

३१५. अ३/ अ३/ अ३

३१६. अ३/ अ३



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका 'विदेह' १४३ म अंक ०१ दिसम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७२ अंक १४३)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३३. कागज/ कागज/ कागज

३७. गिले (meaning different - swallow)/ गिले (थम्)

३१. बर्दिय/ बाह्यीय

DATE-LIST (year - 2013-14)

(१४२५ फसली साल)

Marriage Days:

Nov.2013- 18, 20, 24, 25, 28, 29

Dec.2013- 1, 4, 6, 8, 12, 13

January 2014- 19, 20, 22, 23, 24, 26, 31.

Feb.2014- 3, 5, 6, 9, 10, 17, 19, 24, 26, 27.

March 2014- 2, 3, 5, 7, 9.

April 2014- 16, 17, 18, 20, 21, 23, 24.

May 2014- 1, 2, 8, 9, 11, 12, 18, 19, 21, 25, 26, 28, 29, 30.

June 2014- 4, 5, 8, 9, 13, 18, 22, 25.

July 2014- 2, 3, 4, 6, 7.

Upanayana Days:

February 2014- 2, 4, 9, 10.

March 2014- 3, 5, 11, 12.

April 2014- 4, 9, 10.

June 2014- 2, 8, 9.

Dviragaman Din:

November 2013- 18, 21, 22.

December 2013- 4, 6, 8, 9, 12, 13.



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिमीक ई पत्रिका (विदेह १४३ म अंक ०१ दिसम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७२ अंक १४३))

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

February 2014 – 16, 17, 19, 20.

March 2014 – 2, 3, 5, 9, 10, 12.

April 2014 – 16, 17, 18, 20.

May 2014 – 1, 2, 9, 11, 12.

Mundan Din:

November 2013 – 20, 22.

December 2013 – 9, 12, 13.

January 2014 – 16, 17.

February 2014 – 6, 10, 19, 20.

March 2014 – 5, 12.

April 2014 – 16.

May 2014 – 12, 30.

June 2014 – 2, 9, 30.

FESTIVALS OF MITHILA (2013–14)

Mauna Panchami – 27 July

Madhusravani – 9 August

Nag Panchami – 11 August

Raksha Bandhan – 21 Aug

Krishnastami – 28 August

Kushi Amavasya / Somvari Vrat – 5 September

Hartalika Teej – 8 September

Chauth Chandra – 8 September



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका (विदेह १४३ म अंक ०१ दिसम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७२ अंक १४३))

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Vi shwakarma Pooja - 17 September

Anant Caturdashi - 18 Sep

Pitri Paksha begins - 20 Sep

Jimootavahan Vrata/ Jitija - 27 Sep

Matri Navami - 28 Sep

Kalashsthan - 5 October

Belnauti - 10 October

Patrika Pravesh - 11 October

Mahastami - 12 October

Maha Navami - 13 October

Vijaya Dashami - 14 October

Kojagara - 18 Oct

Dhanteras - 1 November

Diyabati, shyama pooja - 3 November

Anakoota/ Govardhana Pooja - 4 November

Bhratri dwitija/ Chitrakoota Pooja - 5 November

Chhatthi - 8 November

Sama Pooja arambh - 9 November

Devottan Ekadashi - 13 November

ravi vrata arambh - 17 November

Navanna parvan - 20 November

Kartik Poorni - Sama Visarjan - 2 December

Vivaha Panchmi - 7 December



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका (विदेह १४३ म अंक ०१ दिसम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७२ अंक १४३))

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Makar a/ Teel a Sankr anti -14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 29 Januar y

Basant Panchami / Sar aswati Pooj a- 4 Febr uar y

Achl a Sapt mi - 6 Febr uar y

Mahashi var at ri -27 Febr uar y

Hol i kadahan -Fagua -16 Mar ch

Hol i - 17 Mar ch

Sapt ador a- 17 Mar ch

Var uni Trayodashi -28 Mar ch

Jur i shi t al -15 April

Ram Navami - 8 April

Akshaya Tritiya-2 May

Janaki Navami - 8 May

Ravi Br at Ant - 11 May

Vat Savi tri -bar asai t - 28 May

Ganga Dashhar a-8 June

Har i vasar Vr at a- 9 Jul y

Shr ee Guru Poorni ma-12 Jul

VI DEHA ARCHI VE

एगत्रिकाक सबठौ पुरान अंक ब्रैल-रिदेह अ, तिवहता आ देरणागबी कगमे Vi deha e j ournal 's
all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

रिदेह अअंक ३०एगत्रिकाक गहिन -

रिदेह अमा सँ आगाँक अंक३०एगत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका (विदेह १४३ म अंक ०१ दिसम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७२ अंक १४३))

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-i/>
<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-ii/>

२. मैथिली पोथी डाउनलोड Mait hili Books Downl oad

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pot hi>

३. डिजिटल संकलन ऑ मैथिली. Mait hili Audi o Downl oads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audi o>

४. मैथिली वीडियो संकलन Mait hili Vi deos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-vi deo>

५. आधुनिक चित्रकला आ चित्र / मिथिला चित्रकला. M t h i l a Pai n t i n g / M d e r n A r t a n d P h o t o s

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pai n t i n g s -p h o t o s />

रिदेह क एहि सब सहयोगी विकसक सेहो एक लेब जाई ।

३. रिदेह मैथिली ब्लॉग :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. रिदेह मैथिली जानबूत एग्रीगेटर :

<http://videha-aggr egat or .bl ogspot .com/>

४. रिदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. रिदेहक पुरि-कप "जानसबिक गाछ" :

<http://gaj endr at hakur .bl ogspot .com/>

१०. रिदेह गडैअ :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. रिदेह फागल :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. रिदेह: सदेह : पहिल तिवहता (मिथिलासक) जानबूत (बैरंग)



<http://videha-sadehablogspot.com/>

१३. विदेह:ब्लॉग: मैथिली ब्लॉगमे: पहिन रॉब विदेह द्वारा

<http://videha-brailleblogspot.com/>

१४.VI DEHA I ST MAI THIL I FORTNI GHTLY EJ OURNAL ARCHI VE

<http://videha-archiv.blogspot.com/>

१३. विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

१३. विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

११. विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका रीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>

१४. विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१६. मैथिल आब मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानवृत्त)

<http://maithilaurmihila.blogspot.com/>

२०.प्रकाशिन श्रुति.

<http://www.shrutipublication.com/>

२१.<http://groups.google.com/group/videha>

२२.http://groups.yahoo.com/group/VI_DEHA/

२३.गजेन्द्र ठाकुर गडेक

<http://gajendrathakur123.blogspot.com>


२४. लषा लुठका


<http://mangan-khabas.blogspot.com/>



२३. बिदेह वेडियोकरिता आदिक पहिल पोडकास्ट मागठ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२७.  [Videha Radio](http://videharadio.com/)

२१.  [Join official Videha facebook group.](https://www.facebook.com/videhaofficial/)

२४. बिदेह मैथिली नाँठ उमेर

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२६. समादिया

<http://esamad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अक्षरचिह्न आश्रव

<http://anchinharakharakolkatablogspot.com/>

३२. मैथिली हाङ्कु

<http://maithili-haike.blogspot.com/>

३३. माणक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. बिरुषि कथा

<http://vihani-katha.blogspot.in/>

३५. मैथिली करिता

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३६. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३७. मैथिली समालोचना



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका 'विदेह' १४३ म अंक ०१ दिसम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७२ अंक १४३)

मन्त्रीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

<http://maithili-samalochnablogspot.in/>

महत्त्वपूर्ण सूचना: The Maithili pdf books are AVAILABLE FOR free PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>



विदेह:सदर:१: २: ३: ४:३:७:१:+७९० "विदेह"क छिठ संस्करण: विदेह-३-पत्रिका (<http://www.videha.co.in/>) क छन बच्चा समिति ।



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ई पत्रिका 'विदेह' १४३ म अंक ०१ दिसम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७२ अंक १४३)

मन्त्रीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at publishers's (print-version) site
<http://www.shruti-publication.com> or you may write to
shruti_publication@shruti-publication.com

रिदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन

(c) २००४-१३. सर्वाधिकार लेखकाराण आ जतए लेखकक नाम बहि अछि ततए सर्पादकाराण । रिदेह- प्रथम मैथिली पाष्किक ङ-पत्रिका । ISSN 2229-547X VI DEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-सम्पादक: उमेश मंडल । सहायक सम्पादक: गिर कमार सा, वाम रिवस साहू आ कुमारी (मेलारु कमार कर्ण) । भाषा-सम्पादन: गजेन्द्र कमार सा आ पञ्जीकर विद्यानन्द सा । कथा-सम्पादन: ज्ञाति सा टोषरी आ बग्नि लेखी मिह । सम्पादक-शोध-अनुसंधान: सा. ज्ञाती कर्ण आ सा. बाजरी कमार कर्ण । सम्पादक-नाटक-वैयक्तिक-चर्चा-लेखन: गजेन्द्र ठाकुर । सम्पादक-सूचना-सम्पर्क-समाद-पुन्य मंडल आ विद्या सा । सम्पादक-अनुवाद विभाग- विनीत उमेश ।

बचनाकार अणन मौरिक आ अणकाशित बचना (जकब मौरिकताक सर्पूर्ण उतबदागिह लेखक गणक मया डहि) ggajendra@videha.com के मेल अटैचमेण्टक रुपमे doc, docx, rtf वा txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छथि । बचनाक सर्ग बचनाकार अणन सक्रिय परिचय आ अणन कएन कएन गेल ह्योठे पठैतह, से आशा करैत छी । बचनाक अंतमे टीागप बहय, जे ङ बचना मौरिक अछि, आ पहिन प्रकाशिक हेतु रिदेह (पाष्किक) ङ पत्रिकाले देन जा बहन अछि । मेल प्राणु होयरीक राद यथार्तभर शीघ्र (सात दिसक तीतब) एकब प्रकाशिक अंकक सूचना देन जायत । 'रिदेह' प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका अछि आ एमे मैथिली, संस्कृत आ अण्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ सर्रहित बचना प्रकाशित कएन जागत अछि । एहि ङ पत्रिकाले तीमति नक्का ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १३ तिथिके ङ प्रकाशित कएन जागत अछि ।

(c) 2004-13 सर्वाधिकार सुरक्षित । रिदेहमे प्रकाशित सतुठा बचना आ आर्कागरक सर्वाधिकार बचनाकार आ सर्ग्रहकर्ताक नगमे छहि । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशिक किरा आर्कागरक उणयोगक अणिकार किररीक हेतु ggajendra@videha.com पब सर्पर्क कक । एहि साण्टके तीति सा ठाकुर, मधुनिका टोषरी आ बग्नि प्रिया द्वारा डिजागण कएन गेल ।



सिंह बकु





Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिमीक ई पत्रिका 'विदेह' १४३ म अंक ०१ दिसम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ७२ अंक १४३)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA